Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

...र ६ मासे
...म ६
...ौ ६
...ीयामीठे ६
...रेकेबीज ६
...र ६
...ब ६
...ठ ६
...वुरैकोरस २ सेर
...घ २ सेर
...त तीलको ५॥ सेर

मासे...
बंसलोच...
पीपल म...
इलाय...
दैल...
सहद...
...पार...
...लीया...
लौंगन...
खीया...
घोर...
वैल...

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

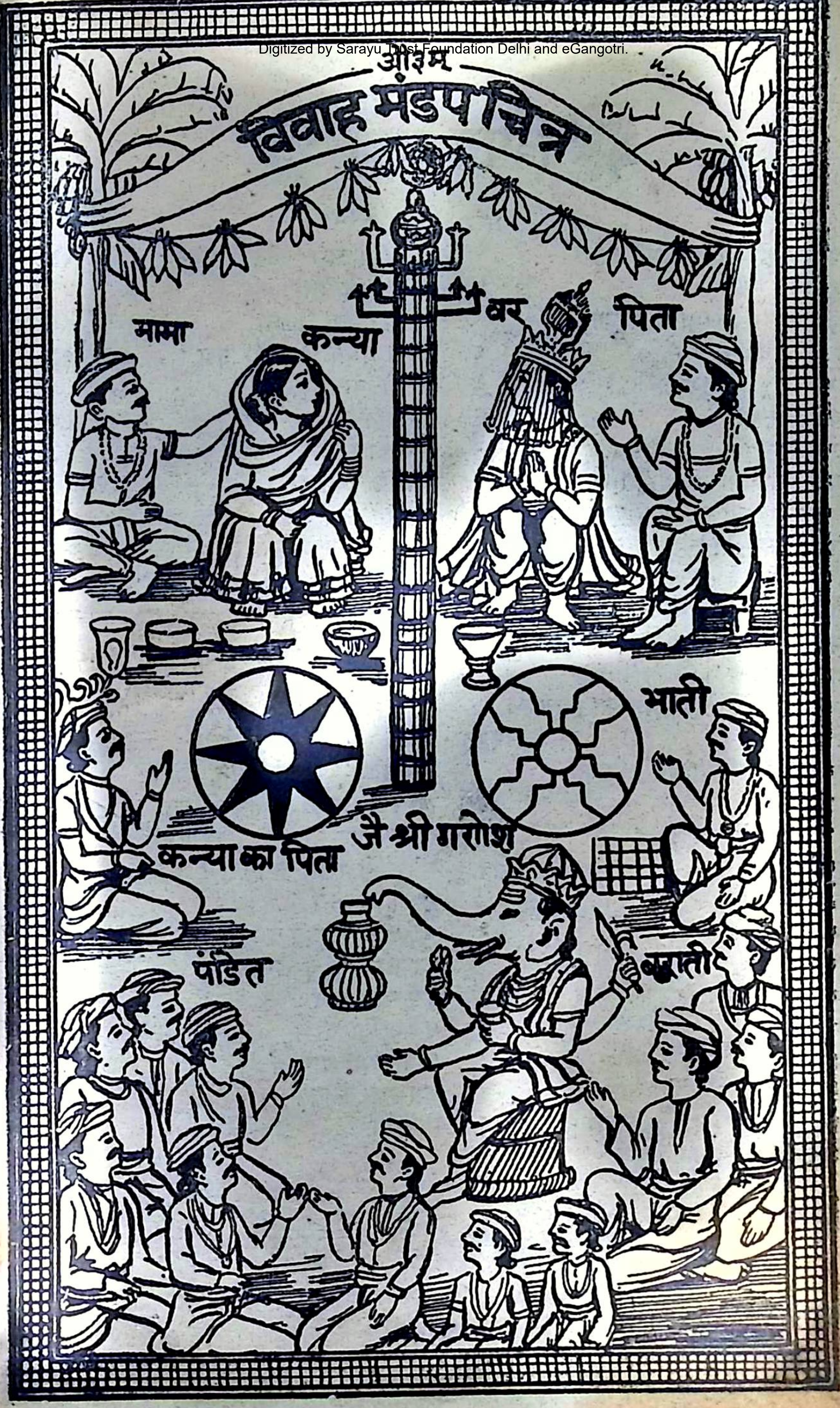

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
ईश्वर-स्तुति विवाहकर्मों की संख्या	५
वेदी रचना, यजमानद्वारा वर के जूते निकलवाना	६
वर के पैर धोना	८
स्वस्तिवाचन	६
कन्या के पिता का संकल्प	१२
कन्या के पिता का गणेशादि पूजन	१३
कन्या के पिता का ४ ब्राह्मणों के तिलक तथा पौंहची बांधना	२१
वर का प्रतिज्ञा संकल्प, वर का गणेशादि पूजन तथा तिलक	२२
कन्या के पिता तथा वर का पवित्री धारण करना	२५
कन्या के पिता द्वारा वर को आचमन करवाना	२५
वर का पौंहची बांधना, तिलक षडर्घ पूजन	२८
१२ आचार्यों का पूजन	३६
मुकुट की पूजा	३१
विष्टर, पाद्य तथा द्वितीय विष्टर देना	३१
अर्घ्य देना	
वर को आचमन मधुपर्क	
अङ्गन्यास	३६
गोदान	४१
वेदी संस्कार व अग्नि मंगाना	४४
कन्या बुलाकर जूते निकलवाना	४५
कन्या की मौड़ी का पूजन	४५
कन्या प्रतिज्ञा संकल्प पूजन	४६
चार वस्त्र देना	४७
परस्पर मुख देखना	४६
ग्रन्थि बंधन तथा वर पक्ष	४६
शाखोच्चार	५०
कन्यादान	५४
वर का गोदान	५६
कुश कंडिका करना	६१
आहुति देना	६८
अन्तरपट लाजाहुति	८१
वर का कन्या को अंगूठी थमाना	८२
बाट पूजन तथा गाथा	८३
पहली परिक्रमा	८३
सप्तपदी करना	८८
द्वितीय सप्तपदी करना	६०
कलश जल का छींटा देना	६१
वर कन्या का सूर्य दर्शन, रात्रि में ध्रुवदर्शन तथा कन्या के हाथ का हृदय से स्पर्श	६२
अंगूठे से कन्या के सिर में रोली लगाना	६३
अग्नि में आहुति तथा स्त्रुवे का घी मुंह से लगाना	६३
पूर्ण पात्र दान	
पूर्णाहुति	६६
छाया पात्र दान	
कर्मकर्त्ता संकल्प	६६
विसर्जन	१००

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री ॥

दो शब्द

प्रिय सज्जनवृन्द !

मनु भगवान् ने आठ प्रकार के विवाह लिखे हैं, यथा--

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः ।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥

(मनुस्मृतिः अध्याय ३ श्लोक २१)

अर्थ—ब्राह्म १, दैव २, आर्ष ३, प्राजापत्य ४, आसुर ५, गांधर्व ६, राक्षस ७, पिशाच ८, विवाह हैं। उपर्युक्त आठ प्रकार के विवाहों में से पहले चार विवाह ही शास्त्रकारों ने श्रेष्ठ माने हैं और उन चारों में ब्राह्म सर्वश्रेष्ठ और मान्य है। यह पद्धति ब्राह्म रीत्यानुसार ही पं० रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी ने समयानुकूल भाषा टीका तथा हस्त-क्रिया सहित रची है। इसका सर्वाधिकार पं० रामस्वरूपजी शर्मा मेरठ निवासी को है और वह खुद अपने आप पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। उन्होंने इस पुस्तक में पंडितों के कठिन परिश्रम को साधारण कर दिया है जिससे थोड़े पढ़े लिखे हुए और विद्वान् कर्मकाण्डी पंडित भी बहुत आसानी से कर्म करा सकते हैं।

मेरठ
जून १९५३

विनीत—
पंडित मदन मोहन शर्मा

दिल्ली में पं० रामस्वरूप की असली पुस्तक मिलने का पता—
देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार दिल्ली-६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ विवाह सामग्री

केले	चावल ऽ=	शंख १
बांस की लकड़ी	फूल) ॥	दुपट्टे २
कंद सुर्ख २ गज	हार १०	सराइं १०
गोटा सफेद दो-तीन गज	धूप) ॥	दीपक १, सरे ४
चंदोवा दो गज लंबा	रुई, पान) ॥	शमी पत्र ऽ-
दो गज चौड़ा	सुपारी ४०	खील ऽ॥
पटड़े दो लंबे ८ गिरह	बताशे व लड्डू	पत्थर का टुकड़ा १
चौड़े आठ गिरह	दूर्वा, कुशा, विष्टर	अंगूठी स्वर्ण की
रेणुका (पीली मिट्टी) ७ सेर	धोती-दो अंगोछे	सिन्दूर) ॥
	दही) ॥ मधु) ॥	मटकने दो
घड़ा १	कांसी के बड़े कटोरे	टके दो रुपये के
करवा १	में आधा सेर घी	स्रुवा
नारियल १	गौ का गोबर	गङ्गाजल
आम की टहनी २	फल-)	ढाक के दौने १२
आटा एक सेर	तिल एक तोला	समिधा २॥ सेर
मिट्टी के तौले में	पीली सरसों १ तोला	छाज (सूप)
पचरंग)॥	प्रोक्षणी प्रणीता के	लोटे दो
रोली)॥	वास्ते दो कटोरी	गाय
मौली दो जोड़े	छाया पात्र के लिए	कपूर केसर,
चन्दन हुरहा	दो कटोरी कांसी की	

नोटिस—इस पुस्तक को कोई नहीं छापे । आजकल कुछ नक्कालों ने हमारी पुस्तक की नकल करनी शुरू कर दी है, सो महानुभावों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक को खरीदने से पहले पुस्तक पर पुराना पता हरिहर प्रेस लिसाड़ी दरवाजा शहर मेरठ और पं० रामस्वरूप शर्मा जी का और उनके सुपुत्र मदन मोहन शर्मा का फोटो देख लें तथा— मिलने का पताः—

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली, लिखा अवश्य देख लें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ विवाह पद्धतिः

[भाषा टीका तथा हस्तक्रिया सहित]

★

प्रणम्य परमात्मानं गणेशं च गजाननम्।
वर्णानां च हितार्थाय प पद्धतिः क्रियते मया॥

टीका—परमात्मा और गणेशजी को प्रणाम करके वर्णों के हितार्थ विवाह पद्धति की भाषा टीका प्रस्तुत करता हूं।

(विवाह कर्म में कर्मों की संख्या, श्लोक)

पादत्राणविमोचनं च वरणं वाचार्चनं विष्टरं, पाद्यं विष्टरमर्घ्यमाचमनविधि-मधुपर्क न्यासौ तथा। गोमौद्यग्नि सुहस्त-लेपनविधिश्शाखाकुशैः कण्डिका। कन्या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दानसुवस्त्र ग्रन्थिहवनं ह्यन्तरपट परिक्रमः ॥१॥

पुनः सप्तपदीं कृत्वा वाम दक्षिणकं तथा। दक्षिणादानसंकल्पं अक्षतांश्चैवदापयेत् ॥२॥

टीका—(उपानह) अर्थात् जूते; पौंची, (वाचा) अर्थात् कन्या पिता के वचन (अर्चन) अर्थात् मुकुट का पूजन करना, (विष्टर) आसन, पैर धोवे, दूसरा विष्टर, अर्घ, आचमनी, मधुपर्क, अंगन्यास, गोसंकल्प, मौड़ीं, अग्नि; हाथ पीले, शाखोच्चार, कुशकण्डिका, कन्या दान, ४ वस्त्र, ग्रन्थि-बन्धन अर्थात् गठजोड़ा, हवन, अन्तरपट, परिक्रमा अर्थात् ४ फेरे, फिर सप्तपदी; अर्थात् सात वचन; बायें-दायें होना, विवाह कराई दक्षिणा का संकल्प, देवताओं पर मन्त्र से अक्षत छोड़ना, ये उपर्युक्त कर्म क्रम से करने चाहिए।

(आचार्यः पूर्वे पश्चिमाभिमुख उपविश्य वरसम्मुखम्)

पण्डित पूर्व की तरफ को बैठे, पश्चिम को मुंह कर के वर के सामने।

(प्रथमं वेदीं रचयित्वा)

पहिले पाधा मिट्टी की दो वेदी बनावे, एक तो नवग्रह की उत्तर में दूसरी हवन की दक्षिण में, फिर उन वेदियों पर पाधा चूने से चौक पूरे जिस तरह पहिले पृष्ठ पर वेदी लिखी है।

(विवाहसमये कन्यापिता स्नातः)

विवाह के समय कन्या का पिता स्नान करे या हाथ-पैर धोकर कुल्ला करे।

(शुचिः शुक्लाम्बरं धृत्वा)

शुद्ध धोती, दुपट्टा श्वेत वस्त्र पहिने।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(ततः कन्यापिता वेदिकामुपगच्छेत्)

विवाह के समय कन्या का पिता स्नान करके शुद्ध हो स्वच्छ वस्त्र पहन-कर उत्तर को मुख कर वेदी के समीप बैठ जाये।

(ततः कन्यापिता सादरं वरमाह्वयेत् वरस्तत्रागत्य उपानहौ त्यजेत्)

फिर कन्या का पिता आदर से वर को बुलावे। वर वहां आकर जूते निकाल आसन पर बैठे, फिर पाधा यह मन्त्र पढ़ेः—

ॐ अथवाराह्या उपानहा उपमुञ्चते ऽग्नौ हवै देवाघृतकुम्भं प्रवेशयांचक्रु-स्ततोवाराहः सम्बभूव तस्माद्वाराही मेदुरो घृतादि सम्बभूव संजानते समे वै तद्रसमभिसंजानते तत्पशू-नामेव तद्रसमभिसंतिष्ठते तस्माद्वाराह्या उपानहाउपमुञ्चते ॥१ ❀

ॐ अथ वाराहविहितमिति तत्र आसीदित्ये व्याध हवी स इमान इह व्यास प्रदेशमात्रीं ततो मूक इत्यर्थे

★पहले सीधे पैर का जूता निकाले।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाराह्या द्वितीय उपानहा उप-
मुञ्चते ॥२॥

(कन्यापिता वरपादौ प्रक्षालयति)

नीचे लिखे श्लोक से कन्या का पिता वर के पैर धोवे।

यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे। तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ विप्राणां पादशौचने। (हस्तौप्रक्षाल्य)

कन्या का पिता हाथ धो डाले। (मंत्र)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥

(वरः पूर्वाभिमुख उपविश्य वारिणा वरात्मानं सिंचेत्)

वर पूर्व को मुंह करके आसन पर बैठे। फिर पाधा वर के ऊपर दूर्वा से गंगाजल का छींटा लगावे। मन्त्र—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः। विष्णुः पुण्डरीकाक्षः पुनातु माम्। तीन बार पढ़े

[वरस्यासनेऽक्षतान् क्षिपेत्]

नीचे लिखे श्लोक से पाधा वर के आसन पर चावल छोड़े—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

(वरः प्राङ्मुखश्चोपविश्य वरहस्ते साक्षतद्रव्यं धृत्वा सर्वजनेभ्योऽक्षतान् दद्यात्)

वर उस आसन पर पलौथी मारकर पूर्व को मुख करके बैठे ।★ फिर वर के हाथ में चावल सहित दक्षिणा दे । पाधा सब मनुष्यों के हाथ में चावल दे ।

(स्वस्तिवाचनं पठेत्)

फिर पाधा यह श्लोक पढ़े—

ओंम मतिकरणं भयहरणं गिरिजाशरणं गणेशमभिवन्दे, केदारेशानवेशं योगीशं सर्वजगदीशम् ।

❀विवाह कर्म में बैठने का विधि । श्लोक—

वरस्य दक्षिणे कन्या, कन्याया दक्षिणे पिता ।
पितुश्च दक्षिणे ब्रह्मा, विवाहे कर्मकारयेत् ॥

वर भी धोती करके बैठे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गज-कर्णकः लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भाल-चन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य्यसम-प्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

हरिः ओं गणानान्त्वा गणपतिँ हवामहेप्प्रयाणान्त्वा प्रियापतिँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिँ हवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम् ॥१॥

स्वस्ति न ऽ इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द-
धातु ॥२॥ पयः पृथिव्व्यामपय ऽ ओष-
धीषु पयो दिव्व्यन्तरिक्षे पयोधाः । पय-
स्वती प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥३॥
विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो
व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोऽसि ।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥४॥
अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता
चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रो
देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता
विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो-
देवता व्वरुणो देवता ॥५॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति-
र्व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति-
र्ब्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वँ शान्तिः शान्ति-
रेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥

शुभ मंशान्ति र्भवतु ॥ पं० ... दत्त शास्त्री

पहले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥७॥ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्ब्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥८॥ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पति-र्य्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्द-धातु । विश्वेदेवा स ऽ इहमादयन्ता-मो३म् प्रतिष्ठ । एषवैप्रतिष्ठानाम् यज्ञो-यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्व्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ओ३म् ॥९॥

सब मनुष्य गणेशजी पर चावल छोड़ दें ।

(कन्या पिता प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्)

कन्या का पिता जल, चावल, पैसा लेकर संकल्प करे ।

ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णु र्विष्णुरद्यो-न्नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषो-त्तमाय अद्य श्री ब्रह्मणोऽन्हि द्वितीयप्रह-श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्व-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्त्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफलप्राप्तिकामनासिद्ध्यर्थं वर्तमान सम्वत्सरे अमुकायने भास्करेऽमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक करण नक्षत्रयोगयुक्तायाम् अमुक-गोत्रोऽहम्, ऽमुकशर्माऽहं❀ श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं महापापशमनपूर्वकं श्रीयज्ञपुरुषनारायणप्रीत्यर्थं प्राजापत्य विवाह विधिना कन्यादानकर्मण्यादौ निर्विघ्न गणपत्यादीनां देवानामावाहनं पूजनं च करिष्ये।

(कन्यापिता गणेशादीनां पूजनं कुर्यात्)

कन्या का पिता गणेश आदि देवों का पूजन करे।

★नोट—ब्राह्मण के यहां शर्म्माहं, क्षत्रिय के यहां वर्म्माहं, वैश्य के यहां गुप्तोहं, शूद्र के यहां दासोहं इस प्रकार उच्चारण करें। पद्मा॥ शर्म्मंब्राह्मणस्य, वर्मे क्षत्रियस्य, गुप्तेति वैश्यस्य, दासेति [illegible] के पहले काण्ड में ऐसा लिखा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवाहनम्, आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम् आचमनम्, स्नानम्, वस्त्रम्, यज्ञोपवीतम्, गंधम्, अक्षतान्, पुष्पम्, धूपं, दीपं, नैवेद्यम्, पुनराचमनं ताम्बूलम्, पूगीफलम् दक्षिणाञ्च समर्पयामि नमो नमः ॥

आवाहन और पूजन कर ये सब गणेशजी पर चढ़ावे, प्रार्थना हाथ जोड़े नीचे लिखे मन्त्र से करे—मन्त्र।

ॐ नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमोनमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमो विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥१॥

(ब्रह्मण आवाहनम्)

कन्या का पिता चावल लेकर ब्रह्मा का आवाहन करे अर्थात् बुलाये ॥

ब्रह्माणं शिरसा नित्यमष्टनेत्रं चतुर्मुखम्। गायत्रीसहितं देवं ब्रह्माणमावाहयाम्यहम् ॥२॥

श्री।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(पूजनम्) पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, (प्रार्थना) हाथ जोड़े ।

ॐ ब्रह्मयज्ज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः । सबुध्न्याऽउपमा ऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः ॥३॥

(विष्णोरावाहनम्)

विष्णु भगवान् का आवाहन करे, नीचे लिखे मन्त्र से ।

केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् । रुक्मिणीसहितं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥४॥

(पूजनम्) पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, (प्रार्थना) हाथ जोड़े ।

ओं विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थोविष्णोस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥५॥

(शिवस्यावाहनम्)

नीचे के मन्त्र से शिव जी का आवाहन करे—

शिवं शंकरमीशानं द्वादशार्द्धं त्रिलोचनम् ।
उमयासहितं देवं शिवमावाहयाम्यहम् ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(पूजनम्) पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे (प्रार्थना) हाथ जोड़े ।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥७॥

(लक्ष्म्या आवाहनम्)

दोनों हाथ पसार कर लक्ष्मीजी का आवाहन करे ।

क्षीरसागरसम्भूतां शरीरे विष्णु माश्रिताम् । यजमानहितार्थाय लक्ष्मी-मावाहयाम्यहम् ॥८॥

पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽ-इषाण ॥९॥

(वरुणाय नमः)

वरुण का पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े । मन्त्र—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिम्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽऋत

CC0. In Public Domain Kirdkar Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सदन्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥१०॥

(ओंकाराय नमः)

ओंकार का पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े । मन्त्र—

ओंकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः । कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ॥११॥

(सूर्याय नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से सूर्य का पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ओं आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न-मृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् । इति सूर्याय नमः ॥१२॥

(चन्द्रमसे नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से चन्द्रमा का पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ओं इमन्देवा ऽअसपत्न ँ सुवद्ध्वम्म-हतेक्षत्त्रायमहतेज्यैष्ठ्याय महते ज्यान-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविशऽएष वोमीराजा सोमोऽस्माकम्ब्राह्मणाना ँ राजा। इति चन्द्राय नमः ॥१३॥

(भौमाय नमः)

सामने लिखे मन्त्र से मंगल का पूजन करे फि हाथ जोड़े।

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति। भौमाय नमः ॥१४॥

(बुधाय नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से बुद्ध का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े—

ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयञ्च अस्मिन्तसधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीनत। बुधाय नमः ॥१५॥

(बृहस्पतये नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से बृहस्पति का पूजन करे फिर हाथ जोड़े।

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्योऽअर्हाद्युम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छ वस ऽऋतप्रजा तदस्मासुद्रविणन्धेहिचित्रम् । बृहस्पतये नमः ॥१६॥

(शुक्राय नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से शुक्र का पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणाऽव्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रियंविपानँ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रिय मिदम्पयोऽमृतम्मधु ॥ इति शुक्राय नमः ॥१७॥

(शनैश्चराय नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से शनैश्चर का पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥१८॥

(राहवे नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से राहू का पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठयावृता ॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(केतवे नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से केतु का पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्या ऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥२०॥

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ॥ गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥ इति नवग्रहपूजा ॥

(षोडशमातृभ्यो नमः)

नीचे लिखें मन्त्र से षोडशमातृ का पूजन करे फिर हाथ जोड़ें ।

ॐ गौरी १ पद्मा २ शची ३ मेधा ४ सावित्री ५ विजया ६ जया ७ देवसेना ८ स्वधा ९ स्वाहा १० मातरो ११ लोकमातरः १२ हृष्टिः १३ पुष्टिः १४ स्तथातुष्टि १५ स्थतात्मकुलदेवता १६ आदौ विनायकः पूज्यश्चान्ते तु कुलमातरः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(सर्पेभ्यो नमः)

नीचे लिखे मंत्र से नाग का पूजन करे फिर हाथ जोड़े।

ओं नमोस्तुसर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवी-मनु: । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ वासुक्याद्यष्टकुलनागेभ्यो नमः ॥

(कन्यापिता ब्रह्मणादीनां तिलकं कृत्वा)

नीचे लिखे मंत्र से कन्या का पिता चार ब्राह्मणों को तिलक करे—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः । नीचे लिखे मंत्र से पौंची बांधे ।

व्रतेन दीक्षा माप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

(आचार्योऽपि कन्यापितृ रक्षाबन्धनं तिलकं च कुर्यात्)

नीचे लिखे मंत्र से पण्डित भी कन्या के पिता के पौंची बांधे—

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तेनाहं प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥१॥

फिर पण्डित नीचे लिखे मंत्र से कन्या के पिता के तिलक करे—

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः । तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ॥२॥

(वरोऽपि प्रतिज्ञा संकल्पं कुर्यात्)

जल, चावल, दक्षिणा लेकर वर भी प्रतिज्ञा संकल्प करे।

ओं अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकराशिस्थिते भास्करे अमुकगोत्रोहममुक शर्म्माहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त धर्मकामार्थ सिद्ध्यर्थं मम विवाहसाङ्गताफलसिद्ध्यर्थं श्रीयज्ञपुरुष नारायण प्रीत्यर्थं आदौगणेशादीनां सर्वे देवानां आवाहनं पूजनञ्चाहं करिष्ये ॥

(वरोऽपि गणेशादिपूजनं कुर्यात्)

वर भी गणेशजी आदि सर्वदेवताओं का पूजन करे, जिस प्रकार कन्या के पिता ने किया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(वरः ब्रह्मचार्यादीनां वरणं कुर्यात्)

फिर वह चार ब्राह्मणों को तिलक करे, जिस प्रकार कन्या के पिता ने किया है, इस नीचे लिखे हुए मन्त्र से--

नमो ब्रह्मण्यदेवाय० । इस मन्त्र से पौंची बांधे

व्रतेन दीक्षामाप्नोति० ॥

(आचार्योऽपि वरस्य रक्षाबन्धनं तिलकं कुर्यात्)

पण्डित भी वर के पौंची बांधे और तिलक करे । मंत्र--

येन बद्धो बली राजा० ॥ आदित्या-वसवोरुद्रा ॥

(चतुर्थमुपग्रहं कृत्वा)

फिर पाधा चार पवित्री कुशा की या कलावे कीं बनावे । पहले दो पवित्री एक सराई में धरे, फिर कन्या के पिता से नीचे लिखे मंत्र से उनकी प्रतिष्ठा करावे-

ऐतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्ब्बृहस्पतये ब्ब्रह्मणे । तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥

पं० प्रेम
जहांगीराबाद
बुलन्दशहर

(पूजनं कुर्यात्)

फिर इस मन्त्र से पूजन करे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओं यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये। विश्वोद्गते कारण-मीश्वरम्वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥

(कर्मकर्त्ता कन्यापित्रे एकं सव्यहस्तं उपग्रहं दद्यात्)

पाधा सराई में से एक पवित्री उठाकर कन्या के पिता को पहिनावे, सीधे हाथ की कनकी उंगली के धोरे की उंगली में। मंत्र—

ओं ब्रह्माणी ब्राह्मणः पत्नी लक्ष्मीसहितो जनार्दनः। उमयासहितः शंभुः प्रथमोप-ग्रहमावाहयाम्यहम्।

(द्वितीयं वामहस्ते उपग्रहं दद्यात्)

दूसरे बायें हाथ की कनकी उंगली के पास की उंगली में पहिनावे, इस मन्त्र से—

ओं कश्यपस्यादिति पत्नी चन्द्रपत्नी च रोहिणी। बुद्धिर्विनायकश्चैव द्वितीयोप-ग्रहमावाहयाम्यहम्।

(पुनः कन्यापिता द्वयोः उपग्रहयोः प्रतिष्ठां कुर्यात्)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाधा और दो पवित्री सराई में धरे, कन्या का पिता उनकी प्रतिष्ठा करे, इस अगले मन्त्र से-

ॐ एतन्ते देव० (पूजनम्) पूजन करके

(कन्यापिता वराय सव्यहस्ते एकमुपग्रहं दद्यात्)

कन्या का पिता सराई में से एक पवित्री निकाल कर वर के सीधे हाथ में पहिनावे जिस प्रकार स्वयं पहिनी । मन्त्र-हैं*

ॐ ब्रह्माणी ब्राह्मणः पत्नी लक्ष्मी सहितो जनार्दनः । उमयासहितः शम्भुः प्रथमोपग्रहस्तुभ्यम्, वर !

(पुनः कन्यापिता द्वितीयं उपग्रहं वामहस्ते दद्यात)

फिर कन्या का पिता दूसरी पवित्री वर के बायें हाथ में पहिनावे ।

ॐ कश्यपस्यादितिः पत्नी चन्द्रपत्नी च रोहिणी । बुद्धिर्विनायकश्चैव द्वितीयोपग्रहस्तुभ्यम्, वर ॥

(कन्यापिता वरायाचमनं दद्यात्)

★नोट—ब्राह्मण यहां वर को यज्ञोपवीत भी पहनावे । मन्त्र—
ॐ यज्ञोपवीतं परम पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कन्या का पिता वर के आचमन के लिए दोने में जल भरे, फिर उसकी प्रतिष्ठा करे इस अगले मंत्र से—

ॐ एतन्तेदेव०। पूजन करे ॐ यम्ब्रह्म०

फिर कन्या का पिता दोना उठाकर वर को दे, वर उसके जल से आचमन करे श्लोक—

ॐ आकाशवाहिनी गंगा करमध्ये तु पावनी। त्रैलोक्ये वन्द्यते देवी आचमनं कुरुते वरः॥

(तदनन्तरं वरस्य वरणं कृत्वा)

एक सराई में वर को पौंची के वास्ते पान पर कलावा, रोली, चावल, सुपारी, मीठा, फूल ये सब सामग्री धर प्रतिष्ठा करे। मंत्र—

ॐ एतन्ते देव०। फिर पूजन करे नीचे लिखे मंत्र से

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्त० सब सामग्री चढ़ावे।

(पुनः कन्यापिता वरस्य वरणं कुर्यात्)

फिर कन्या का पिता वर के पौंची बांधे। मंत्र—

ॐ वरं वृणीते बलवद्धं वैदेवा एतस्य गृहस्य होमं प्रेशंतते तस्मादेवंवर समर्घयति क्षिप्रेण इमं गृहं जुह्वन्ति तस्माद् वरं वृणीते। तिलक करे।

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(कन्या पिता वाचाऽर्घ्यं प्रतिष्ठां कुर्यात्)

फिर पाधा एक दोने में चावल, रोली धरे, कन्या के पिता से उसकी प्रतिष्ठा करावे। मंत्र—

ॐ एतन्तेदेव सवितः० ॥ फिर पूजन करे। मन्त्र—

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति० ॥

(कन्या पिता वरस्य दक्षिणहस्तेऽर्घं धृत्वा पुनः दक्षिणपाणिनां संपुटितं कृत्वा)

यजमान उस दोने को उठाकर वर को दे, वर सीधे हाथ पर रख ले और कन्या का पिता उस दोने पर अपना सीधा हाथ रखकर यह श्लोक पढ़े—

यन्मया भाषितं पूर्वं★ कन्या मनसि कर्मणा। इदमर्घं मंगलमांगल्यमच्छिद्रकरणाय च। वाचावचनं त्वया कुर्यादहमेव प्रतिग्रही। देवद्विजप्रसादेन वाचासुवचनम्भवेत् ॥

अर्थ—मैंने जो पहले संकल्प किया था, वह मेरा मनोरथ विष्णु भगवान् और देवताओं और ब्राह्मणों की कृपा से आज पूरा हुआ।

★जब लड़की की सगाई की थी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(वरः षडाचार्यपूजनं कुर्यात्)

वर छः आचार्यों × का पूजन करे।

(षडर्घान् दद्यात्)

वर के आगे छः दोने धरे, उनमें थोड़ा सा जल भरे, चावल आदि सब सामग्री धरे, फिर प्रतिष्ठा करे। मंत्र—

एतन्ते देव० फिर पूजन करे मंत्र—

ॐ यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति० ॥

(पुनः कन्यापिता वरसव्यहस्ते एकमर्घं धृत्वा)

फिर कन्या का पिता एक दोना वर के सीधे हाथ पर धरे और पाधा नीचे लिखे यह मंत्र पढ़े—

ॐ षडर्घ्या भवन्त्याचार्य्या ऋत्विग्वैवाह्यो राजा प्रियः स्नातक इति। प्रतिसम्वत्सरानर्हयेयुर्यक्ष्यमाणास्त्वृत्विज इति :—

(आचार्यलक्षणाम्) ये आचार्य के लक्षण हैं।*

ॐ नोट—छः आचार्यों के नाम हैं—स्नातक १, गुरु २, राजा ३, मित्र ४, वर ५, ऋत्विक् ६। याज्ञवल्क्य स्मृति में लिखा है।

×ये ६ लक्षण आचार्य के हैं—वेदों की जानने वाला १, जितेन्द्रिय २, गुणवान् ३, विद्वान् ४, नीतिवान् ५, बुद्धिमान् ६।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदाङ्गी ब्रह्मचारी च गुणवान् सुविचक्षणः । नीतिज्ञो बुद्धिमान् श्रेष्ठ एवमाचार्य्य उच्यते ॥

(वरस्य वामपार्श्वे न्युब्जी कुर्यात्)

वर उस दोने को ईशान दिशा में रख दे, इस प्रकार कन्या का पिता ६ दोने ६ बार वर के हाथ में दे। वर लेकर ईशान दिशा में रख दे।

(अथ द्वादश आचार्यान् भूमौ स्थापयित्वा)

फिर पाधा नीचे लिखे क्रम से १२ जगह पृथ्वी में चावल धरे और यह मंत्र पढ़ता जावे। (प्रथम)*

१–गौरीश्वरविवाहे ब्रह्मा आचार्य्यः
२–सावित्रा ब्रह्मविवाहे बृहस्पतिः आ०
३–लक्ष्मीविष्णुविवाहे गणपतिः आचार्य्यः
४--वन्हिकाश्यपविवाहे पाराशरः आ०
५--छायासूर्य्यविवाहे गर्गमुनिः आचार्य्यः
६--रेणुकाजमदग्निविवाहे वसिष्ठः आ०

+नोट—एक की जगह प्रथमे, दो की जगह द्वितीये, तीन की जगह तृतीये ऐसा कहना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७--मन्दोदरीरावणविवाहे वसिष्ठः आ०
८--रोहिणीचन्द्रविवाहे द्रोणाचार्य्यः आ०
९--सीतारामविवाहे गौतमः आचार्य्यः
१०--द्रौपद्यर्जुनविवाहे व्यासः आचार्य्यः
११--भानुमतीभोजराजविवाहे वररुचिःआ०
१२--कलियुगे सर्वे ब्राह्मणा आचार्य्याः

फिर कन्या के पिता और वर से उनकी प्रतिष्ठा करावे। मंत्रः—

ॐ एतन्तेदेव० पूजन करे ॐ यम्ब्रह्म०

(प्रार्थना) फिर नीचे लिखे मंत्र से हाथ जोड़े।

ॐ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥

(कन्यापिता वरं दक्षिणजानुं सम्बोध्य)

फिर कन्या का पिता वर के सीधे घोटूं पर अपना सीधा हाथ धर के नीचे लिखा मन्त्र पढ़े—

ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तमिति ब्रूयात (वरवाक्यम्) वर ऐसा कहे—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(ॐ अर्चयेति वरेणोक्ते)

फिर यजमान ऐसा कहे कि आप भली प्रकार वृत्ति वाले हो मैं तुम्हारा पूजन करता हूं वर कहे कि करो।

(वरस्यं मुकटार्चनं कुर्यात्)

कन्या का पिता नीचे लिखे मन्त्र से पांचों उंगली रोली से भर कर वर के मुकट पर लगावे।

ॐ रोचन्ते रोचनादिभिस्तरणीर्विश्वदर्शितो ज्योष्टिकृदसि सूर्यविश्वमाभासि रोचनम् ॥

(ततः कन्या पिता पण्डितो वा कुशमयं दूर्वामयं वा विष्टरद्धयं धृत्वा)

फिर कन्या का पिता या पाधा कुशा या दूर्वा पर कलावा लपेट कर दो विष्टर बना कर रख दे।

(ततो विष्टरमादाय)

फिर पाधा एक विष्टर को दोने में रखकर कन्या के पिता से उसकी प्रतिष्ठा करावे। मंत्र—

ॐ एतन्तेदेव० पूजन करे। ॐ यम्ब्रह्म० ॥

(कन्यापिता विष्टरं सव्यहस्ते गृहीत्वा)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कन्या का पिता विष्टर का दोना अपने सीधे हाथ में ले, पाधा नीचे लिखा हुआ यह मन्त्र पढ़े--

ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः इत्यन्येनोक्ते ॐ विष्टरं✻ प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय।

(वरो विष्टरं गृहीत्वा)

कन्या का पिता दोने में से वह विष्टर उठाकर वर के हाथ में दे, वर नीचे लिखे हुए मन्त्र को पढ़कर विष्टर पर बैठे।

ॐ वर्षोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्य्यः। इमन्तमभितिष्ठामि योमा कश्चाभिदासति।

✻इत्यनेन आसने उत्तराग्रविष्टरोपरि उपविशति

वर उस विष्टर को उत्तर को मुख करके सीधे पैर के तले धरे।

(ततो यजमानः पाद्यमादाय)

पाधा एक दोने में जल भरे, उसमें इतनी चीज रक्खे।

×विष्टर आसन को कहते हैं। विष्टरं प्रतिगृह्णामि वर ऐका कहे।

×ब्राह्मण के यहां विष्टर को पहले सीधे पैर तले धरे। अन्य जाति के यहां पहले बायें पैर के तले धरे, यह पद्म पुराण में लिखा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जलं च कुंकुमं चैव तण्डुलं पुष्पमेव च ।
सर्वौषधिसमायुक्तं पञ्चांगं पाद्यमुच्यते ॥

जल, चावल, केशर, फूल, सितावर । फिर नीचे लिखे मंत्र से उसकी प्रतिष्ठा करे ।

ॐ एतन्ते देव० । फिर पूजन करे । मन्त्र—

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति० ।

(पुनः कन्या पिता पाद्यं गृहीत्वा)

फिर पाधा उस दोने को कन्या के पिता के हाथ पर रखकर नीचे लिखा मंत्र पढ़े ।

ओं पाद्यं पाद्यं पाद्यमित्यन्येनोक्ते ।
ओं पाद्यं प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ।
ओं पाद्यम्प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय वरः ॥

(यजमानञ्जलितोञ्जलिना पाद्यामादाय वरः)

कन्या के पिता से वर उस दोंने को अपने सीधे हाथ से ले ।

(इति दक्षिणं चरणं प्रक्षाल्यानेनैव क्रमेण वामचरणं प्रक्षालनम्)

वर उस दोने के जल को अपने सीधे पैर के अंगूठे पर गेरे और कन्या का पिता धोवे, आगे लिखे मंत्र से—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओं विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥

(कन्यापिता हस्तौ प्रक्षाल्य)

फिर कन्या का पिता नीचे लिखे मंत्र से हाथ धोवे। मंत्र—

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोपि वाः। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्या-भ्यन्तरः शुचिः ॥

(ततः पूर्ववद्विष्टरान्तरं गृहीत्वा)

पाधा पहली प्रकार दूसरा भी विष्टर कराये, पीछे देख कर।

(ततोऽर्घमादाय)

एक दोने में नीचे लिखी वस्तुएं रखे।

जलक्षीरकुशाग्राणि दधिदूर्वाक्षयांस्तथा। यवांश्च कुंकुमञ्चैवेत्यष्टांगं ह्यर्घ्य-मुच्यते ॥ अर्घ, जल, दूध, कुशा, दही, दूब, चावल, जौ और केशर डाल कर प्रतिष्ठा करे।

ओं एतन्ते देव०। पूजन करे। यम्ब्रह्म वे०—

(आचार्य द्वारा कन्या पिता हस्तार्घ गृहीत्वा)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाधा उस दोने को उठाकर कन्या के पिता के हाथ में दे और नीचे लिखा मंत्र पढ़े—

ओं अर्घोऽर्घोऽर्घं इत्युक्ते ऽन्येनार्घः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत्।

ओं अर्घं प्रगृह्णामीत्यभिधाय ॥

(वरो यजमानहस्तादर्घं गृहीत्वा मंत्रं पठेत)

कन्या के पिता से वर उस दोने को अपने हाथ में ले। मंत्र—

ओं आपःस्थ युष्माभिःसर्वान्कामा-नवाप्नुवानीति।

(इत्यर्घं वामहस्ते गृहीत्वा सव्यहस्तेन शिरसि किंचिदक्षतादिकं धृत्वा)

वर उस दोने को बायें हाथ में ले और सीधे हाथ से उस दोने के चावल लेकर अपने मुकुट के ऊपर छोड़े।

(पुनः सव्यहस्ते गृहीत्वा)

फिर उस दोने को सीधे हाथ में ले यह मंत्र पढ़े।

ओं समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनि-मभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरा मापरा-सेचि मत्पयः ॥

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(इत्यर्घपात्रस्थंजलमीशान्यां दिशि क्षिपेत्)

उस दोने को ईशान दिशा में जल डाल कर छोड़ दे ।

(ततः आचमनीयमादाय)

एक दोने में जल भरे, कन्या का पिता उसकी प्रतिष्ठा करे ।

ओं एतन्तेदेव० । पूजन करे मन्त्र—

ओं यम्ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति० ।

(पुनः कन्यापिता आचमनीयपात्रमादाय)

फिर कन्या का पिता उस दोने को सीधे हाथ में ले । मन्त्र—

ओं आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयमित्यन्येनोक्ते ओं आचमनीयं प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् । ओं आचमनीयं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय-

(वरो यजमानहस्तादाचमनीयं गृहीत्वा)

कन्या का पिता वर के सीधे हाथ में दोने को दे । इस मन्त्र से—

ओं आमागन्यशसा स ँ सृज वर्च्चसा । तम्माकुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टं तनूनाम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(इत्यनेन सकृदाचामेत्, द्विस्तूष्णीं आचमेत्)

वर उस दोने को बायें हाथ में रखकर, सीधे हाथ में उसका जल लेकर, इस मन्त्र से तीन बार आचमन करे—

ॐ गंगा विष्णुः ३ ॥ इसको तीन बार पढ़े ।

(पुनः आचमनीयपात्रं भूमौ क्षिपेत्)

फिर उस दोने को पृथ्वी पर रख दे ।

(वरस्य हस्तौ प्रक्षाल्य)

फिर वर के इस मन्त्र से हाथ धुलावे मन्त्र--

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥

(ततो यजमनः कांस्य पात्रस्थदधिमधुघृतानि अन्येन पात्रेण पिहितानि कराभ्यामादाय)

कन्या का पिता कांसे के पात्र में या अलवे में गाय का दही घृत शहद् रखे फिर उनको ढाक के पत्ते से ढककर उनकी प्रतिष्ठा करे ।

ॐ एतन्ते देव० ॥ फिर पूजन करे । यम्ब्रह्मवे० ॥

(कन्या पिता दधिपात्रं गृहीत्वा) पाधा उस दही के पात्र को कन्या के पिता के सीधे हाथ में दे और यह मंत्र पढ़े--

ॐ मधुपर्कों मधुपर्कों मधुपर्क इत्यन्येनोक्ते । ओं मधुपर्कः प्रतिगृह्यतामिति

×नोट—सर्पिरेकगुणं प्रोक्तं शोधितं द्विगुणं कधुः । नधुपर्कविधौ प्रोक्तं सर्पिषश्च समं दधि ॥ एक गुणा बी, शहद दो गुणा, दही एख घुणा होना चाहिए, मधुपर्क उसको कहते हैं जो दही में शहद मिलाया जाता है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दाता वदेत्। ओं मधुपर्कं प्रतिग्रह्णामी-त्यभिधाय वरः॥

ॐ मित्रस्येति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दो मित्रो देवता मधुपर्कदर्शने विनियोगः॥ कन्या का पिता जरासा जल छोड़े।

(वरो मधुपर्कं निरीक्ष्य)

उस पात्र को उघाड़ कर वर को दिखावे कि दही में कुछ अशुद्ध वस्तु न हो। मंत्र--

ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्तां मित्रस्य त्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य त्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे॥

(वरो यजमान हस्तान्मधुपर्कं गृहीत्वा)

कन्या का पिता दही का पात्र वर को दे, वर उसको सीधे हाथ में लेले। मंत्र-

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(इत्यनेन मधुपर्कं गृहीत्वा वामहस्ते धृत्वा)

वर उस पात्र को बायें हाथ पर रखकर यह मंत्र पढ़े ।

ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त-आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामीति ॥

(इत्यनेन अनामिकांगुष्ठाभ्यां त्रिःप्रदक्षिणामालोड्य भूमौ किंचिन्निक्षिप्य पुनस्तथैव वारत्रयं निक्षिपेत्)

वर कनकी उंगली के धोरे की उंगली और अंगूठे से उसे चलावे, थोड़ा सा तीन बार पृथ्वी में छींटा लगाकर। कन्या का पिता वर को तीन बार जरा-जरा सा लड्डू दे जिससे वह लगा-लगा कर खा ले ।

(वरः स्वयमेव प्राशयेत्)

वर उसमें से दही लेकर स्वयं खा ले । मंत्र—

ॐ यन्मधुऽनो मधव्यं परमँ् रूप-मन्नाद्यम् । तेनाऽहं मधुनो मधव्येन पर-मेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्ना-दोऽसानि ॥

(इत्यनेन वारत्रयं मधुपर्क प्राशनम्)

इस मंत्र से तीन बार दही खाये जो ऊपर लिखा है ।

(सर्वं वा प्राश्नीयात्)

अथवा सब खा लेवें या मुंह को लगाले ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(ततो मधुपर्कशेषमसंचरेदेशेउत्तरतो वा निदध्यात्)

बाकी मधुपर्क को वेदी से अलग उत्तर की तरफ रख दे ।

(वरयजमानयोर्हस्तान् प्रक्षाल्य)

फिर वर और कन्या का पिता दोनों हाथ धो डालें । मंत्र–

ओ॓ँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥

(ततो वरो वारत्रयमाचमेत्)

फिर वर तीन बार आचमन करे । मंत्र–

ओं गंगाविष्णुः० ॥ यह तीन बार पढ़े ।

(उच्छिष्टदूरीकरणम्)

दही के पात्र को वहां से उठवा दे फिर उस जगह जल का छींटा लगावे, नीचे लिखे मंत्र से–

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥

(अथांगन्यासः) एक दोने में जल, चावल, पान, सुपारी, कलावा, दक्षिणा रख कर वर के सीधे हाथ में दे । वह उस दोने को अपने अंग से लगाता जावे नीचे लिखे श्लोक के प्रमाण से

मुख के — ओंवाङ्मआस्येऽस्तु

नासिका के — ओंनसोर्मेप्राणोऽस्तु

नेत्रों के — ओंअक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ×

कानों के — ओंकर्णयोर्मे

× पहले सीधी आंख से लगावे फिर बांई आंख से इसी प्रकार कानों से और कंधों से और जांघों से लगावे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भुजाओं के

श्रोत्रमस्तु । ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ।

जंघा के सब अंगों के

ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ❀ ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥

फिर वर उस दोने को वेदी से अलग उत्तर में रख दे ।

(अथगोदानम्) फिर कन्या का पिता वर को गौ दे ।

ओं गौर्गौर्गौरिति वरयजमानेनोक्ते ।

वर यजमान द्वारा 'गौर्गौर्गौ' यह तीन बार कहलावे ।

(गोदानसंकल्पः)

कन्या का पिता गौ या उसकी दक्षिणा का संकल्प करे ।

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमेमासेऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक-गोत्रोऽहं अमुकशर्म्माहं आत्मनः पुत्री-विवाहसांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीयज्ञपुरुष-नारायणप्रीत्यै मधुपर्कसंबंधिनीं इमां गां तन्मौल्योपकल्पितां रजतमयीं दक्षिणां

× दोनों हाथों से सिर से लेकर पैर तक सब अंगों को छुआवे । गोदान ब्राह्मण को लेना चाहिए ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथानाम गोत्राय, अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय (ब्राह्मण को) वर्मणे क्षत्रियाय (क्षत्रिय को) गुप्ताय (वैश्य को) शूद्राय (शूद्र को) विष्णुरूपाय वराय तुभ्यमहं संप्रददे ।

वह दक्षिणा या गौ वर को दे, वर यह कहे (ॐ स्वस्ति) यहां यह कह देना चाहिए कि लड़की को तैयार कर लेना ।

(गोदान प्रतिष्ठासंकल्प)

कन्या का पिता गौदान की प्रतिष्ठा का संकल्प कर वर को दे ।

अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे० गोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं रजतं चन्द्रदैवतं वा तुभ्यमहमुत्सृजे ॥

(ततो वरस्तृणां यजमानेन सह गृहीत्वाऽग्रिम-मन्त्रं पठेत्) (पाधा) वर और यजमान दोनों के हाथ में दूर्वा दे और यह अगला मंत्र पढ़े । मन्त्र—

× ॐ माता रुद्राणां दुहितावसूना ँ स्व सादित्यानाममृतस्य नाभिः । प्रनुवोचं चिकितषे जनाय मागामनागामदितिं

×वर गौ को त्याग दे या दान कर दे या वन में छोड़ दे । तृण को भक्षण कर हमको पुष्ट करे क्योंकि गौ रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री और देवताओं की भगिनी है ऐसा कहे इसका विस्तारपूर्वक हाल याज्ञवल्क्य स्मृति अध्याय १ में लिखा है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वधिष्ट। ममचाऽमुष्य च पाप्माहतः।

(ओं उत्सृजततृणान्यत्तु इत्युच्चैर्ब्रूयात्)

वर और कन्या का पिता दोनों उस दूर्वा को खींच कर तोड़ डालें फिर दूर्वा को पृथ्वी पर रख दें।

(वेदिकार्य्यं सम्पादयेत्) अब वेदी का काम करे।

(यजमानः पृथिव्या आवाहनम् कुर्यात्)

कन्या का पिता धरती का आवाहन करे मन्त्र—

विष्णुनालकरूपेण जगतां पतिनोद्धृताम्
त्तमायुक्तां धरणीं च पृथ्वीमावाहयाम्यहम्॥

पूजन कर हाथ जोड़ें। मन्त्र—

ओं स्योना पृथिवी नो भवान्त्तरावेशनी।
यच्छानः शर्म्मसम्प्रथाः। पृथिव्यै नमः॥

(पञ्चभूसंस्कारान् कुर्यात्)

अब नीचे लिखे मंत्रों से वेदी का संस्कार करावे।

(ततो वेदिकायां तुषकेशशर्कराभस्मादिरहितायाम्)

पाधा वेदी पर देखले कुछ अशुद्ध वस्तु तृणादि न हों।

(हस्तमात्रपरिमितां चतुरस्रं भूमिं कुशैः परिसमूह्य)

एक हाथ भर चतुष्कोण अर्थात् चौकोर वेदी पर कुशाओं से जल का छींटा लगावे।

(तान् कुशान् ऐशान्यां दिशि त्यजेत्)

उन कुशाओं को ईशान दिशा में रख दे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(गोमयोदकेनोपलिप्य) वेदी पर गौ के गोबर से लीपे ।

(स्रुवमूलेन प्रदेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य)

स्रुवे की जड़ से वेदी पर अंगूठा और उसके पास की उंगली को फैलाकर तीन लकीर खींचे ।

(उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य)

कन उंगली के निकट की उंगली और अंगूठे से वेदी की उन रेखाओं पर से कुछ मिट्टी उठाकर ऊपर को उछाले ।

(जलेनाभ्युत्त्य) फिर कुशा से जल का छींटा लगावे ।

* (नूतनकांस्यपात्रेऽग्निमानीय स्थापनं कुर्यात्)

नये कांसे के पात्र या शकोरे में अग्नि मंगाकर अपने आगे सराई से ढक कर रखले । फिर वर तथा कन्या का पिता नीचे लिखे मन्त्र से उसका आवाहन करे ।

मुखं समस्तदेवानां खाण्डवोद्यानदाहकम् ।
पूजितं सर्वयज्ञेषु अग्निमावाहयाम्यहम् ॥

(सम्पूज्य प्रार्थना) पूजन कर हाथ जोड़े इस मन्त्र से ।

ओं अग्निदूतं पुरोदधे हव्यावाहमुपब्रुवे ।
देवान् आसादयादिह ॥१॥ अग्नये नमः

× अग्नि को नाई से नहीं मंगाना चाहिए ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओं एतन्ते देव सवित० (पूजनम्) पूजन करे।

ओं ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमं पुरस्ता० ॥

समिधामाधाय अग्निसंस्थापनं कुर्यात्।

पाधा वेदी पर लकड़ी रखकर अग्नि रखे।

*(ततःस्नातां कन्यामानीय)

फिर पाधा स्नान कराकर कन्या को बुलावे।

(ततः कन्यापिता तत्रागत्य उपानहौ त्यजेत्)

कन्या का पिता कन्या के जूते निकाल कर रखदे। इस मंत्र से

ओं अथ वाराह्य उपानहा उपमुञ्चते० ॥

ओं अथ वाराह विहित० ॥

(कन्यापिता हस्तौ प्रक्षाल्य)

फिर कन्या का पिता हाथ धो डाले, नीचे लिखे मन्त्र से—

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाव० ॥

(कन्या मण्डपे वरस्य दक्षिणे उपवेशयेत्)

कन्या को मण्डप के नीचे वर के सीधे हाथ की तरफ बैठावे।

(आचार्यो मौड़ीमर्चयेत्)

फिर पाधा मौड़ी के चारों ओर रोली लगाकर उसकी प्रतिष्ठा, आगे लिखे मंत्र से वर से करावे।

×कन्या को स्नान कराकर वस्त्र आभूषण अपने घर के पहिनावे। कन्या का मामा या भाई मण्डप के नीचे वर के सीधी तरफ लाकर बैठा दे, वर ऐसा कहे कि "आइये"।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २-२-२६४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एतन्ते देव० ॥ पूजन करे ओं यम्ब्रह्म० ॥

(पुरोहितः कन्याशिरसि मुकटं धारयेत्)

यजमान का पुरोहित कन्या के सिर पर मौड़ी बांधे । मंत्र—

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु० ॥

(पुनः कन्या स्वस्तिवाचनं कारयित्वा)

फिर कन्या से स्वस्तिवाचन करावे, यह मन्त्र पढ़े ।

(कन्या प्रतिज्ञासंकल्पः)

फिर कन्या जल, चावल, दक्षिणा लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे ।

ओं गणानां त्वां गणपति ँ ० ॥ ओं अद्य तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णु० अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोऽहं अमुकनाम्नी-अहं आत्मनः विवाहोद्देश्ये गणेशादीनामावाहनं पूजनं च करिष्ये ।

(कन्या गणेशादिपूजनं कृत्वा)

कन्या गणेश आदि सब देवताओं का पूजन करे ।

❀ (ततः कन्यापिता वराय वस्त्रचतुष्टयं दद्यात्)

× चार वस्त्र-दुपट्टे दो और धोती दो कन्या और वर को देनी चाहिए । "ॐ गणानां त्वां गणपति ँ" इसको पढ़े ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कन्या का पिता वर को यथाशक्ति चार वस्त्र दे। पहले पाधा उनकी प्रतिष्ठा यजमान से करावे, ये मन्त्र पढ़े—

(कन्यापिता वस्त्रचतुष्टयसंकल्पं कृत्वा)

कन्या का पिता जल, चावल, दक्षिणा लेकर ४ वस्त्रों का संकल्प करे।

एतन्ते देव० ॥ पूजन करे ओं यम्ब्रह्म० ॥

अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्माहं आत्मनः पुत्रीविवाहसांगतासिद्ध्यर्थं श्रीयज्ञपुरुषनारायणप्रीत्यै चतुर्वस्त्राणि विष्णुदैवतो यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय वराय विष्णुरूपाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

कन्या का पिता वे चारों वस्त्र वर को दे दे।

(वरः एकं वस्त्रं कन्यायै दद्यात्)

वर उसमें से एक धोती कन्या को नीचे लिखे मंत्र से दे।

ओं जराङ्गच्छ परिधत्स्व वासो भवा कृष्टीनामभिशस्ति पावा शतञ्च जीव शरदः सुवर्च्चारयिञ्च पुत्राननु संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥

वर उस धोती को घुटने पर रख दे।

पं॰ प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २ २ ४
बुलन्दशहर (उ॰ प्र॰)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(वरो द्वितीयं वस्त्रं कन्यायै दद्यात्)

वर दूसरा वस्त्र कन्या को दे, नीचे लिखे मंत्र से--

ॐ याऽअकृन्तन्नवयं या अतन्वत याश्च देव्यस्तन्तूनभितस्ततन्थ ॥ तास्ता देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ।

वर इस दुपट्टे को कन्या के सीधे कंधे पर रख दे ।

(वरस्तृतीयं वस्त्रं गृहीत्वा)

वर तीसरा वस्त्र अर्थात् धोती हाथ में ले, ये मंत्र पढ़े -

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि । शतञ्च जीवामि शरदः पुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ।

वर उस वस्त्र को अपने घुटने पर रखले ।

(वरश्चतुर्थवस्त्रम् गृहीत्वा) वर चौथा वस्त्र हाथ में ले । मंत्र-

ॐ यशसा माद्यावापृथिवीयशसेन्द्रा बृहस्पतिः यशोभगश्चमाविदद्यशो माप्रतिपद्यताम् (इति पठित्वोत्तरीयं परिधते)

इस दुपट्टे को अपने सीधे कन्धे पर रख ले ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाधा वर कन्या दोनों को आचमन करावे। इस मंत्र से—

ॐ गंगाविष्णुः ३ ॥ तीन बार पढ़े।

(हस्तौ प्रक्षाल्य) फिर हाथ धो डाले। मंत्र—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाव० ॥

(ततः कन्याप्रदेन परस्परं समंजेथामितिप्रेषितयोः)

×(परस्परं सम्मुखीकरणम्)

वर और कन्या आपस में मुंह देख लें।

(वरो मन्त्रं पठेत्) वर इस मन्त्र को पढ़े।

ॐ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानिनौ सम्मातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥

(ततः कन्या प्रदकर्त्तृक ग्रन्थिबन्धनम्)

कन्यादाता और उसकी पत्नी वर-वधू का गठजोड़ा करते हुए वस्त्र के कोण में दूर्वा, चावल, दक्षिणा, दुपट्टे के पल्ले में बांधे।

×कन्या का मुख पूर्व की ओर वर पश्चिम को मुख करके कन्या का मुंह देखे। इस से आपस में मित्रता होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[यजमानः कन्यावरयोर्हस्तलेपनं कुर्यात्]

कन्या का पिता, कन्या और वर के हाथों में हल्दी लगावे कन्या के दोनों हाथों में और वर के सीधे हाथ में।

मन्त्र—लक्ष्मीप्रिया च लक्ष्मीदा लक्ष्मीच सुजनप्रिया।
सौभाग्यदा वरस्त्रीणां हरिद्रे श्रीः सदास्तु मे ॥

वर कन्या दोनों के हाथों में दक्षिणा और कलावे का एक-एक सिरा दे।

[प्रथमं वरपक्षस्य पुरोहितः शाखोच्चारणं कुर्यात्]

पहले वर की तरफ से शाखोच्चार पढ़े।

ॐ श्रीमत्पंकजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रो नलश्चन्द्रो भास्करवित्तपालवरुणाः प्रेताधिपाद्या ग्रहाः॥ प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः। स्वामी शक्तिधरश्चलांगलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥१॥ गौरी श्रीकुलदेवता च सुभगा भूमिः प्रपूर्णा शुभा। सावित्री च सरस्वती च सुरभिः सत्यव्रतारुन्धतिः॥ स्वाहा जांबवन्ती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्नविध्वंसिनी। वेला चाम्बुनिधेः समीनमकराः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥२॥ गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्वदा। कावेरी सरयूमहेन्द्रतनया चर्मण्यवती वेदिका॥ क्षिप्रा वेत्रवती महासुर-नदी ख्याता च या गण्डकी। पुण्याः पुण्यजलैः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जहांगीराबाद २०२३६४

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

समुद्रसहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥३॥ लक्ष्मीकौस्तुभ-पारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा। धेनुः कामदुधा सुरेश्वरगजो रम्भा च देवांगना॥ अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंसोऽमृतं चांबुधेः। रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥४॥ नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनं। यद्विष्णोश्च पदत्रयं त्रिभुवनं ख्यातं च रामत्रयम्। गंगावाहपथत्रयं सुविमलं वेदत्रयं ब्राह्मणम्। संध्यानां त्रितयं द्विजैरभिहितं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥५॥ वाल्मीकिः सनकः सनन्दनमुनिर्व्यासो वशिष्ठोभृगु। जाबालिर्जमदग्निरामजनकौ गाधरो गौतमः॥ मांधाताऋतुपर्ण-वेणुसगरा धन्यो दिलीपो नलः पुण्यो धर्मसुतो ययाति नहुषः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥६॥ अश्वत्थो वटवृक्ष-चन्दनतरुर्मन्दारकल्पद्रुमो। जम्बूनिम्बकदम्बचूत-सरलावृक्षाश्च ये क्षीरिणः॥ सर्वे ते फलमिश्रिताः प्रतिदिनं वैराजितं राजते। रम्यं चैत्ररथं सनन्दनवनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥७॥ गंगागोमतिगोपतिर्गण-पतिर्गोविन्दगोवर्धनौ। गीता गोमयगौरिजागिरि-सुता गंगाधरो गौतमः॥ गायत्रीगरुड़ो गदा गिरिगजा गम्भीर गोदावरी। गंधर्वग्रहगोपगोकुलगणाः कुर्वन्तु

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
जहांगीराबाद २०२३६४

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वो मंगल ॥८॥ इत्युक्तं वरमंगलाष्टकमिदं संचिन्त्या-नामास्थितम् । गंगासागरसंगमः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥९॥ (अथगोत्रोच्चारणम्)

फिर गोत्र और पीढ़ियों का उच्चारण करे ।

अद्याऽमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुक-शर्म्मणः प्रपोत्राय ॥ १॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः पौत्राय ॥२॥ अद्याऽमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुक शर्मणः पुत्राय ॥३॥

(त्रिवारं पठेत) इस प्रकार तीन बार पढ़े ।

(पुनः कन्यापक्षे शाखोच्चारणम्)

फिर कन्या का पुरोहित शाखोच्चार पढ़े जिस प्रकार वर के पुरोहित ने पढ़ा है फिर पीढ़ियों का उच्चारण करे ।

अद्याऽमुक गोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुक शर्म्मणः प्रपौत्रीम् ॥१॥ अद्यामुकगो-त्रस्याऽमुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्रीम्॥२॥ अद्याऽमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्रीम् ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(त्रिवारं पठेत) इस प्रकार तीन बार पढ़े।

(कन्यावरयोरुपरि-अक्षतान् क्षिपेत)

पाधा नीचे लिखे मन्त्र से वर कन्या पर चावल छोड़े।

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं•

(कन्यायां: पिता निजपुत्रीं संकल्पयेत्)

कन्या का पिता कन्या का संकल्प अपनी स्त्री से गठजोड़ा करते हुए करे या एक पैसा छुवाकर मंगाले।

(दाता शंखस्थदूर्वाक्षत फलपुष्पचंदन जलान्यादाय जामातृदक्षिणाकरोपरि कन्यादक्षिणाकरं निधाय)

कन्या का पिता ये सामग्री शंख, चन्दन, दूर्वा चावल, फूल, फल और दक्षिणा अपने हाथ में ले, कन्या के सीधे हाथ के अंगूठे को अपने सीधे हाथ में थामे और उसे (वर के सीधे हाथ में पकड़ाते हुए ये मन्त्र पढ़े—

दाताऽहं वरुणोराजाद्रव्यमादित्य देवतम्। वरोऽसौविष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वियंविधिः॥

(वरस्य वामहस्ते द्रव्यं धृत्वा)

वर के बायें हाथ के नीचे यथा शक्ति पैसे धर संकल्प करे।

×कन्या का पिता वर से कन्यादान स्वीकार करने की प्रार्थना करने की प्रार्थना करे और वर अपना सीधा हाथ कन्या दान लेने को फैलाये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कन्यादान-संकल्पः

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय नारायणस्य नाभिकमलोद्भूतसकललोकपितामहेन ऐरावतपुण्डरीक श्रीकूर्मवाराह सप्तद्वीपमण्डितायां पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भरतखण्डे निखिलजनपावने आर्य्यावर्तैकदेशे बहुक्षेत्रान्विते भरतखण्डे श्रीगङ्गा-यमुना-सरस्वती-गोदावरी-नर्मदा सरयू बहुतीर्थसम्पन्ने पावनविष्णुलोक-रुद्रलोक ध्रुवलोक निवास सिद्ध्यर्थं श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यामुकक्षेत्रे शुभसम्वत्सरे अस्मिन् अमुकायने गतसूर्य्येऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे

× इस समय अपने कुटुम्ब या रिश्तेदारी के मनुष्य या स्त्री जो कुछ कन्यादान में द्रव्य दान देना चाहें अपने अपने हाथ में ले लें और अपने गोत्र का नाम और अपना नाम लेकर संकल्प के बाद वर को दे दें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमुकऋतौ अमुकनामनक्षत्रे यथायोग-करणमुहूर्ते वर्तमानचन्द्रतारानुकूले एवं ग्रहगुणविशिष्टायां अस्यां पुण्यवेलायां अमुकगोत्रो अमुकराशिः अमुकशर्म्मा सपत्नीकोऽहं अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनोऽमुकसूत्रिणोऽमुकशर्म्मणः प्रपौत्राय ॥१॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुक-शाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पौत्राय ॥२॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्र-वरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्मणः पुत्राय ॥३॥ त्रिवारं पठेत् ॥

वर का पुरोहित इस प्रकार तीन बार पढ़े ।

अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुक-वेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः प्रपौत्रीम् ॥१॥

अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुक वेदिनोऽमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुक-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शर्म्मणः पौत्रीम् ॥२॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पुत्रीम् ॥३॥ त्रिवारं पठेत् ॥

कन्या का पुरोहित इस प्रकार तीन बार पढ़े—

इमां कन्यां सालङ्कारां स्वर्णजटितमणिमौक्तिकविद्रुमाहतधौतरक्तपीतकौशेय शोभितां ताम्बूलपूगीफलागुरु--कर्पूर--श्रीखण्ड--कस्तूरिका--कुंकुम--लवगं– जातिफल–चम्पक– मालतीकुसुमराज– विविधफल–तूलकादि– रौप्यकांस्यताम्रमृण्मयभाण्डादीनां गोवृषमहिष्युष्ट्राजादिकादासदासीनां ग्रामादीनां अन्नपानलवणसर्वोपस्करसहितां यथाशक्तिहिरण्यमग्निदैवतं कांस्यपात्रसोमदैवतं ताम्रपात्रमर्कदैवतम् व्यञ्जनकं वायुदैवतं अश्वमादित्यदैवतं गोवृषं रुद्रदैवतं दासदासी प्रजापतिदैवतं वा शय्यां

× पहिले वर के पड़बावा और बाबा तथा पिता का नाम ले, फिर कन्या की तीन पीढ़ी का उच्चारण करे। इस प्रकार तीन बार कहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तूलकानानाविधं इन्द्रदैवतम् मूलं नागदैवतं ग्रामं प्रजापतिदैवतं महिषी धर्मदैवतं वासो बृहस्पतिदैवतं मणि-मौक्तिकं रुद्रदैवतं सर्वोपस्करं विष्णु-दैवतं महद्वस्त्रद्वयावृतां विवाहदीक्षितां प्रजापतिदैवतं शत जन्मब्रह्मलोकनिवासार्थं एतानि वस्तूनि यत्किंचित्प्रत्यक्षं अमुक-गोत्रायामुकनाम्ने वराय विष्णुरूपाय पत्नीत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे ।

फिर कन्या का पिता कन्या का हाथ और सब वस्तु वर के हाथ में दे दे, वर ऐसा कहे (ओं स्वस्ति) फिर वर पैसों पर से अपना हाथ उठाले और वह पैसे गुजराती या पड़िये को उठवादे ।

(कन्यादानप्रतिष्ठासंकल्पः)

फिर कन्या का पिता कन्यादान प्रतिष्ठा का संकल्प करे यथा-शक्ति दक्षिणा, जल, अक्षत, लेकर और लोग या स्त्री भी जो कुछ कन्यादान में देना चाहें वे भी संकल्प करे ।

अद्याऽमुकगोत्रोहममुकशर्माहं कृतैतत् कन्यादान-प्रतिष्ठा-सांगताफल-प्राप्त्यर्थं हिरण्यमग्निदैवतं अमुकगोत्राय अमुक-नाम्ने वरायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विष्णुरूपाय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ वर को देवे।

(ततो वर इमं मन्त्रं पठेत)

वर यह मन्त्र अपने मुख से उच्चारण करे अर्थात् पढ़े ।

ॐ कोदात्कस्माऽअदात् कामोदात् कामायादात् । कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते (कन्यापिता प्रार्थनां कुर्यात्)

कन्या का पिता हाथ जोड़े और पाधा नीचे लिखे मन्त्र पढ़े ।

कन्यां कनकसम्पन्नां वस्त्राभरणैर्युताम् । दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया ॥ ऋषयः सर्वभूतानां साक्षिणः सर्वदेवताः । इमां कन्यां प्रदास्यामि पितॄणां तारणाय च ॥२॥ कन्यादानं महादानं सर्वदाने सुदुर्लभम् । तदद्य दैवयोगेन त्वं गृहाण वरोत्तम ॥३॥ गौरी कन्यामिमां विप्र यथाशक्तिविभूषिताम् । गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्रः समाश्रय ॥४॥ मम वंशसमुद्भूताह्यष्टवर्षाणि पालिता । तुभ्यं वर मया दत्ता पुत्रपौत्र प्रवर्द्धिनी ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(कन्यापुरोहिताय वरो भार्याप्रतिग्रहदोषनिवारणार्थं गोदानं ददाति) ब्राह्मणों के यहां शुक्लों को दक्षिणा देवे। वर कन्या के पुरोहित को दान दे। (गोदान संकल्पः)

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमेमासे० अमुकगोत्रोहं अमुकनामाहं भार्य्या-प्रतिग्रहदोषनिवारणार्थं इमां गां सवत्सां गोविन्ददैवतं यथावस्तुयथोपस्कर सहितां तरुणीरूपसंयुक्तां सुशीलां च पयस्विनीं कामघ्नीं वातन्निष्क्रयिणीं दक्षिणां हरिण्यमग्निदैवतं रजतचन्द्रदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

(गोदानप्रतिष्ठासंकल्पः)

गोदान प्रतिष्ठा का संकल्प करे, जल चावल, दक्षिणा लेकर। *

गोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसम्प्रददे ब्राह्मण को दे दे।

× ब्राह्मण और शुक्ल के यहां दक्षिणा भी देनी चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(वैश्यगृहे आश्रिताय वत्सरीं दद्यात्)

वैश्य के यहां आश्रित को बछिया देवे।

(पुनः भूयसीं दक्षिणां दद्यात्)

वर ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा दे, फिर पाधा वर-कन्या दोनों पर चावल छोडे, नीचे लिखे मन्त्र से।

मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणामुदयस्तव ॥ (कन्यावरयोर्वस्त्रग्रन्थिपूजनम्)

वर कन्या दोनों के वस्त्रों की प्रतिष्ठा पूजन करे।

एतन्ते देव० ॥ पूजन करे। यम्ब्रह्म वेदा०

(मंत्रेण ग्रन्थिबन्धनम्)

पाधा, वर कन्या दोनों के वस्त्रों की गांठ बांध दे। मन्त्र—

गणाधिपं नमस्कृत्य उमां लक्ष्मीं सरस्वतीम्। दम्पत्यो रक्षणार्थाय पटग्रन्थि करोम्यहम्। श्रीदेवदेवः कुरु मंगलानि सन्तानवृद्धिं कुरु सन्ततञ्च। धनायुवृद्धिं कुरु इष्टदेवःमद्ग्रन्थिबंधे शुभदा भवन्तु॥

(ततस्तां पाणौ गृहीत्वा)

वर कन्या के सीधे हाथ थाम कर यह मन्त्र पढ़े।

ॐ यदषि मनसा दूरं दिशोनुपव-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मानोवा । हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु ।। [श्रीअमुकदेवी] ❀

(ततो वेदीं दक्षिणस्यां दिशि वारिपूर्णदृढ़कलश मूर्ध्वं तिष्ठतो मौनिनः पुरुषस्य स्कन्धे अभिषेकपर्यन्तं धारयेत्)

एक कलश में जल भरे और पञ्च पल्लव रख कर वेदी से दक्षिण दिशा में ब्राह्मण खड़ा हो जावे और कन्धे के बराबर उस कलश को रक्खे और चुपचाप मार्जन के समय तक मौन खड़ा रहे ।

अथ कुशकण्डिकाकरणम्

(ब्राह्मणवरणसंकल्पः)

वर एक पान पर रोली, चन्दन, चावल, कलावा दक्षिणा पुष्प रखकर संकल्प करे ।

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमे मासे० अमुक गोत्रोऽहं अमुकशर्म्माहमद्यक- र्तव्यविवाहोमकर्म्मणि कृताकृतावेक्षण- रूप ब्रह्मकर्म्म कर्तुममुकगोत्रममुक- शर्म्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दन- ताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे ।

× इस समय वर को कन्या का जो नाम हो उसे लेना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उस पान पर से कलावा लेकर जो ब्राह्मण ब्रह्मा बने उसके पौंची बांधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति० ॥

(तिलकम्) पान की रोली से तिलक करे।

नमोब्रह्म० ॥ [वृतोस्मीति प्रतिवचनम्]

हां मेरा वरण हो चुका, ऐसा ब्राह्मण कहे।

(यथाविहितं कर्म्म कुरु इति वरेणोक्ते)

वर पाधा से ऐसा कहे कि जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराओ।

(करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

पाधा ऐसा कहे जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराऊंगा।

(ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा)

अग्नि से दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिए ढाक का पत्ता धरे।

(कुशाऽभावे सर्वत्र कार्ये दूर्वा ग्राह्या लोकाचारयोरपि)

(तदुपरि प्रागग्रान कुशानास्तीर्य्य)

उस पत्ते के ऊपर कुशा धरे पूर्व को मुंह करके।

(ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय अत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय कल्पितासने उपवेशयेत्)

५० कुशाओं का ब्रह्मा बनावे उस ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा करा उसे पत्ते की कुशा के ऊपर उत्तर को मुंह करा कर उस आसन पर रख दे।

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूय, कुशैराच्छाद्य, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्)

एक सकोरे में जल भरे फिर उस सकोरे को कुशाओं से ढक कर ब्रह्मा की तरफ देखकर फिर अग्नि से उत्तर की तरफ एक कुशा धर कर उसके ऊपर सकोरा धरे।

(ततः परिस्तरणम्) वेदी के चारों ओर कुशा धरे।

(बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय)

६४ कुशा में से सोलह कुशा लेकर इस प्रकार धरे।

(आग्नेयादीशानान्तम्)

आग्नेय से ईशान दिशा तक चार कुशा धरे।

(ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्)

ब्रह्मा से अग्नि तक चार कुशा धरे।

(नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्)

नैर्ऋत्य से वायव्य दिशा तक चार कुशा धरे।

(अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्)

अग्नि से प्रणीता पात्र तक चार कुशा धरे।

(ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्)

अग्नि से उत्तर की ओर पश्चिम दिशा में तीन कुशा पवित्र छेदन के लिए धरे।

(पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तगर्भं कुशपत्रद्वयम्)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तीन कुशा के नीचे की कुशा निकाल कर दो पत्रों वाली कुशा वेदी से उत्तर में पवित्री बनाने के लिए धरे।

(प्रोक्षणीपात्रम्)

एक सकोरा उत्तर में प्रोक्षणी पात्र के लिए धरे ।

(आज्यस्थालीसम्मार्जनार्थं कुशत्रयम्)

एक घी का पात्र और ३ कुशाएं वेदी से उत्तर में मार्जन के लिए धरे ।

(उपयमानार्थं वेणीरूपकुशत्रयम्)

उपयमन के लिए तीन कुशा बट कर उत्तर में रक्खे।

(प्रादेशमात्र-समिधस्तिस्रः)

अंगूठे से उसके पास की उंगली के बराबर तीन समिधा उत्तर में धरे (स्रुवः आज्यम्) उत्तर में स्रुवा और घी धरे ।

(षट्पंचाशदुत्तरवरमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतण्डुल पूर्णपात्रम्) एक पात्र में वर दो सौ छप्पन मुट्ठी चावल भर या यथा शक्ति लोटे में भर कर पूर्णपात्र उत्तर में धरे ।

(पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्व-पूर्व दिशिक्रमेणासादनीयम्)

पवित्र छेदन कुशाओं से पूर्व-पूर्व दिशा में सब वस्तु रखता जाय ।

(अथ तस्यामेव दिशि असाधारणवस्तून्युपकल्पनीयानि तत्र शमीपलाशामिश्राः लाजाः)

उसी दिशा में और भी वस्तुयें ढाक या आम की या शमी की समिधा * धरे और लाजा (खील) धरे ।

(दृषदुपलं कुमारी भ्राता सूर्पः दृढ़पुरुषः । अन्यदपि तदुपयुक्तमालेपनादि द्रव्यम्)

CC0. In Public Domain. Kirtiram Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दृषदुपल नाम का एक पत्थर का बाट, कन्या का भाई बिना तांत का छाज, दृढ़ पुरुष और भी लेपनादि वस्तु धरे।

(ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेशमात्रं पवित्रकरणम्) पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्र छेदन करके बालिश्त लम्बी पवित्री बनावे, पवित्र करने के लिए।

(ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रे निधाय)

पवित्री सहित हाथ करके प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले।

(अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा)

पाधा अनामिका कन-उंगली के धोरे की उंगली और अंगूठे में पवित्री ले।

(त्रिरुद्दिगनम् अनामिका और अंगूठे से प्रणीता के जल को तीन बार उछाले।

(प्रणीतोदकेन त्रिःप्रोक्षणीप्रोक्षणम्)

प्रणीता का जो जल है उसे प्रोक्षणी पात्र में तीन बार करे।

(ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनम्)

पवित्रे से प्रोक्षणी पात्र के जल का सब चीजों पर छींटा लगावे।

(ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निधाय)

अग्नि और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रखकर।

× अंगूठे और उस के पास की उंगली को फैलाकर प्रादेश कहलाता है।

❀ वे समिधा इतनी लम्बी होनी चाहिये जो ऊपर लिख आये हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः)

घी के कटोरे में घी रक्खे और उसमें यह भी देख ले कि कोई अशुद्ध वस्तु न पड़ी हो।

(ततोऽधिश्रयणम्) घी का कटोरा अग्नि पर रक्खे।

(ततोज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणाक्रमेण वह्नौ तत्प्रक्षेपः)

एक कुशा को जलाकर वेदी और घृत के चारों ओर दाहिनी ओर को फिरा कर अग्नि में डाल दे।

(पर्यग्निकरणम्) अग्नि को चेतन करदे।

(ततः स्रुवप्रतपनं कृत्वा) स्रुवे को अग्नि में तपाकर।

(सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः)

सम्मार्जन कुशाओं को लेकर अग्रभाग से स्रुवे के आदि मध्य और अन्त में लगावे।

(स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य)

प्रणीता के जल का स्रुवे पर छींटा देकर।

(पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात्)

फिर स्रुवे को तपाकर कुशा के ऊपर दक्षिण में धरे।

(तत आज्यस्याग्नेरवतारणम्)

घी के पात्र को अग्नि पर से उतार ले।

(तत आज्यस्य प्रोक्षणीवदुत्पवनम्)

फिर तीन बार घी को ऊपर उछाले।

(अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम्)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घृत में देखले कि कोई अशुद्ध वस्तु तो नहीं पड़ी है। पड़ी हो तो निकाल दे।

(पुनः पूर्ववदुत्पवनम्)

फिर घी को तीन बार ऊपर को उछाले।

(ततः उपयमनकुशान्वामहस्तेनादाय)

उपयमन जो कुशा है उनको वहां से बांये हाथ में उठाले।

(उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा)

फिर पाधा उठकर प्रजापति भगवान् का ध्यान करे।

(तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत्)

पाधा चुपचाप मौन होकर तीन समिधा घृत में भिगो कर अग्नि में छोड़ दे।

(तत उपविश्य सपवित्रः)

पवित्री हाथ में लिये हुए कर्मकर्ता बैठ जाय।

(प्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणाक्रमेणाग्निपर्युक्षणं कृत्वा)

पवित्री से प्रोक्षणी के जल का छींटा अग्नि के चारों तरफ लगादे।

(प्रणीतापात्रे निधाय)

प्रणीतापात्र में पवित्री धरे।

(पातितदक्षिणजानुः)

सीधा घोटा निवावें।

(कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः)

अपने सीधे घुटने से ब्रह्मा तक कुशा मिलाले।

(समिद्धतमेऽग्नौस्रुवेणाज्याहुतिर्जुहोति)

सीधे हाथ में स्रुवे को लेकर प्रचण्ड अग्नि में घी डाले।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनन्तर स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ।

अब पाधा स्वाहा करावे और आहुति के बाद स्रुवे का कुछ घी प्रोक्षणीपात्र में ही डालता जावे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ।

(इतिमनसा) यह आहुति मन से देवे ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय ।

(इत्याधारौ)

इन आहुतियों का नाम ही आधार है ।

ओं अग्नये स्वाहा-इदमग्नये ।

ओं सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय ।

(इत्याज्यभागौ) ये दो आज्यभाग नामक आहुति हैं

ओं भूः स्वाहा-इदमग्नये । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे । ॐ स्वः स्वाहा-इदं सूर्याय ।

(एतामहाव्याहृतयः)

ये तीन महाव्याहृति नामक आहुति हैं ।

ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ (इदमग्निवरुणाभ्याम्) ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओं स त्वन्नो अग्ने घमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयत्व नो वरुण ँ रराणो वीहिमृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा॥ (इदमग्निवरुणाभ्याम्)॥२॥ ओं अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपा (व) श्चसत्यमित्वमयासि। अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा-इदमग्नये०॥ ३॥ ओं येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्यस वितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदम्वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः॥ ४॥ ओं उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय०॥५॥

(एताः सर्वाःप्रायश्चित्तसंज्ञकाः)

इनका नाम सर्वप्रायश्चित्त आहुति हैं। अब प्रोक्षणी पात्र में घी न डालें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(ततोन्वारब्धं विना)

घुटने से ब्रह्मा तक मिली हुई कुशा हटाकर ये आहुति दे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा-इदमग्नये स्विष्टकृते। (उदकोपस्पर्शनम्)

यह दो आहुति देकर, जल को हाथ लगावे।

(अथ राष्ट्रभृत) ये राष्ट्रभृत् आहुति हैं।

ॐ ऋताषाड्ऋत धामाग्निर्गन्धर्वः सनऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदमृतासाहे ऋताधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय०। ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसोमुदोनाम ताभ्यः स्वाहा। इदमोषधिभ्योऽप्सरोभ्योमुद्भ्यः०।

ॐ सँहितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वः सनऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट्। ॐ इदं सँहिताय विश्वसाम्ने सूर्य्याय गन्धर्वाय०। ॐ सँहितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वस्तस्यमरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं मरीचिभ्योप्स-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रोभ्य आयुवोभ्यः। ॐ सुषुमणः सूर्यरश्मि-श्चन्द्रमा गन्धर्वः। स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं सुषुमणाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय०। ओं सुषुमणः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमागन्धर्वस्तस्य नक्षत्राएयप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यः ओं इषिरोऽविश्वव्यचा व्वातो गन्धर्वः स नऽइदम् ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदमिषिरायव्विश्वव्यचसे वाताय०॥ ओं इषिरो व्विश्वव्यचाव्वातो गन्धर्वस्तस्या पोऽप्सरस ऊर्जोनाम ताभ्यःस्वाहा इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यः०। ओंभुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः सन इदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय०॥ ओं भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा-नाम ताभ्यः स्वाहा। इदम् दक्षिणाभ्यो ऽप्सरोभ्य स्तावाभ्याः०॥ ओं प्रजापति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विश्वकर्मा मनो गन्धर्व्वः सन इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय० । ओं प्रजापतिर्व्विश्वकर्म्मा मनोगन्धर्व्वस्तस्यऽऋक्सामान्यप्सरसऽएष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदं ऋक्सामभ्योऽप्सरोभ्यः एष्टिभ्यः० । (इति राष्ट्रभृत्)

ये राष्ट्र भृत्नाम से आहुति हैं ।

❀ (अथ जयाहोम) ओं चित्तञ्च स्वाहा इदं चित्ताय० ॥१॥ ओं चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्यै० ॥२॥ ओं आकूतं च स्वाहा इदंमाकूताय० ॥३॥ ओं आकूतिश्च स्वाहा इदमाकूत्यै० ।४॥ ओं विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय० ॥५॥ ओं विज्ञातिश्च स्वाहा इदं विज्ञात्यै० ॥६॥ ओं मनश्च स्वाहा इदं मनसे० ॥७॥ ओं शक्वर्यश्च स्वाहा इदं शक्वरीभ्यः० ॥८॥ ओं दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय० ॥९॥ ओं पौर्णमासञ्च स्वाहा

तेरह आहुतियों के नाम जया होम हैं ।

CC-0. In Public Domain Kirtiram Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदं पौर्णमासाय॰ ॥१०॥ ओं बृहच्च स्वाहा इदं बृहते॰ ॥११॥ ओं रथंतरं च स्वाहा इदं रथन्तराय ॥१२॥ ओं प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु। तस्मै विशः समनंत सर्वाः स उग्रः सइहव्यो बभूव स्वाहा इदं प्रजापतये॰ ॥१३॥

(इति जया होमः) इनका जया नाम आहुति है।

(अथाभ्यातानहोमः) ओं अग्निर्भूतानामाधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां। पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा। इदमग्नये भूतानामधिपतये॰ ॥१॥ ओं इन्द्रो ज्येष्ठानामाधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यांदेवहूत्यां स्वाहा। इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये॰ ॥२॥ ओं यमः पृथिव्याअधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यांदेवहूत्यां स्वाहा। इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये॰ ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अथ प्रणीतोदकस्पर्श) प्रणीता जल को छूवे ।

ओं वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः समावत्व-स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदंवायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये०॥४॥ ओं सूर्योदिवा अधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं सूर्याय दिवा अधिपतये०॥५॥ ओं चन्द्रमा नक्षत्राणाकधिपतिः समावत्व-स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये० ॥६॥ ओं बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः समा-वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्य-स्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देहूवत्या स्वाहा। इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये० ॥७॥ ओं मित्रः सत्यानामधिपतिः समाव-त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे स्यामाशिष्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्यां पुरो धायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहू-त्यां स्वाहा। इदम् मित्राय सत्यानाम-धिपतये० ॥८॥ ओं वरुणोऽपामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे स्यामा-शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा। इदं वरुणाय अपाम-धिपतये० ॥९॥ ओं समुद्रः स्रोत्यानाम-धिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्य स्यां देवहूत्यां स्वाहा। इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये० ॥१०॥ ओं अन्नं साम्राज्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरो-धायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा। इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये० ॥११॥ ओं सोम ओषधीनामधिपतिः समावत्व-स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा। इदं सोमाय ओषधीनामधिपतये०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ १२ ॥ ओं सविता प्रसवानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये०॥ १३॥ ओं रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा। इदं रुद्राय पशूनामधिपतये०॥ १४॥

(अथ प्रणीतोदकस्पर्श)

फिर प्रणीता जल को हाथ लगावें।

ओं त्वष्टा रूपाणामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा। इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये० ॥ १५ ॥ ओं विष्णुः पर्वतानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा। इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये० ॥ १६ ॥ ॐ मरुतो गणानामधिपतयेः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे स्-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिकर्मण्य-स्यां देवहूत्या ँ स्वाहा । इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यः० ॥१७॥ ओं पितरः पितामहाः परेवरेततास्ततामहाइहमाव-न्त्वस्मिन् ब्रह्मयस्मिन्क्षत्रे स्यामाशिष्य-स्याँ पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परे-भ्यो वरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यः० ॥१८॥

(अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः)

फिर प्रणीता के जल को छूवे ।

(इत्यभ्याताननामहोमः) ये अभ्यातान नाम आहुति हैं ।

(अथाज्य होमः) ये भी घी की आहुति दें ।

ओं अग्निरैतु प्रथमो देवताना ँ सोऽस्यै प्रजा मुञ्चतु मृत्युपाशात् । तदय ँ राजावरुणोनुमन्यतां यथेय ँ स्त्रीपौत्रमघन्न रोदात्स्वाहा । इदमग्नये० ॥१॥ ओं इमाम-ग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशू न्यापस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभिप्रबुध्यतामिय ँ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा । इदमग्नये० ॥२॥ ओं स्वस्ति नोऽग्नेदिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्यऽयथायजत्र । यदस्या महि दिवी जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रँ स्वाहा । इदमग्नये० ॥ ३ ॥ ॐ सुगन्तु पंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्ध्ये ह्यजरन्न आयुः । अपेतु मृत्युरमृतं न आगाद्वैवस्वतो नोऽभयं कृणोतु स्वाहा । इदमग्नये० ॥४॥ (अथान्तर्पट)

कन्या, वर दोनों को एक वस्त्र से ओट करके, पाथा अग्नि में नीचे लिखे मन्त्र को मन में पढ़कर, आहुति छोड़े।

ॐ परं मृत्योऽनुपरेहि पंथा यस्तेऽन्य इतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाँ रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा । इदं वैवस्वताय० ॥५॥

फिर उस वस्त्र की ओट हटा ले।

(अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः) प्रणीता के जल को छूये।

(अनेन वाऽयम् होमः) इस रीति से हवन करे।

(अथ लाजाहुतिः) अब खीलों की आहुति दे।

ततो वधूमग्रतः कृत्वा वधूवरौ प्राङ्मुखौ स्थितौ भवतः ।

* ततो वरांजलिपुटोपरिसंलग्नवध्वंजलिघृताभिधारित

---

* कन्या का भाई उस छाज को लेकर अग्नि से ईशान कोण में खड़ा हो। कन्या वर के हाथ में खील देवे वे सबें अग्नि में छोड़ें।

CC0. In Public Domain Kritikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वधूभ्र तृदत्त शमी---

पलाशमिश्रैर्लाजावधू कर्तृको होमः ।

लड़की को अगाड़ी करे, वर का पीछे पूर्व की तरफ मुंह रहे, वर की अञ्जलि पर कन्या की अञ्जलि रखकर कन्या का भाई, वर और कन्या दोनों के हाथ में, छाज में से खील और जांड के पत्ते और ढाक की समिधा घी में भिगोकर दे। वे अग्नि में नीचे के मन्त्र से पहली आहुति दें।

ओं अर्यमणं देव कन्या अग्निमयक्षत। स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा। इदमर्यम्णे ॥१॥

इसी प्रकार नीचे लिखे मन्त्र से दूसरी आहुति दें।

ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपंतिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा। इदमग्नये० ॥२॥

इसी प्रकार नीचे लिखे मन्त्र से तीसरी आहुति दे।

ॐ इमाल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यञ्च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियं स्वाहा इदमग्नये० ॥३॥

(ततो वधू दक्षिणहस्तं सांगुष्ठं गृह्णाति वरः)

वर कन्या के सीधे हाथ का अंगूठा अपने सीधे हाथ में थाम कर ये नीचे लिखे मन्त्र पढ़े।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः । भगोऽर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥४॥

अमोहमस्मि सा त्वँ सात्वमस्यमोहऽम् । सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम् ॥५॥

तावेव विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून् ॥६॥
ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतमिति ॥७॥

(अथ वधूमग्रे कृत्वा गतः प्राङ् मुखः पूर्वोक्तकल्पितदृषदुपलोपरि दक्षिणपादेनारोहयति वरः)

कन्या अगाड़ी होकर उत्तर में जो पाषाण (बाट) रक्खा है। अपने सीधे पैर का अंगूठा इस मन्त्र से पूर्वमुख हो उसके लगावें ।

ॐ आरोहेमम्मानमश्मेव त्वँ स्थिरा भव । अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः ॥ इति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अथ गाथां गायति)

वर ऐसा कहे हम स्त्रियों का जो उत्तम पतिव्रतादि यश है, उसका गान करते हैं।

ओं सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति।

यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः ॥१॥

याम्यां भूतं ँ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्।
तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः इति ॥२॥
(ततोऽग्रे वधूः पश्चाद्वरः प्रणीता ब्रह्म सहित मग्निप्रदक्षिणं कुरुतस्ततो वरपठनीयो मन्त्रः)

कन्या अगाड़ी वर पिछाड़ी ब्रह्मा तथा प्रणीता सहित अग्नि की इस मन्त्र से परिक्रमा करे।

ओ३म् तुभ्यमग्ने पर्य्यवहन्त्सूर्या वहतु ना सह। पुनः पतिभ्यो जायांदाग्ने प्रजया सहेति (पठन् परिक्रमेत)

अब पहली परिक्रमा करावे (अर्थात् फेरा) पहिला फेरा हुआ। (पुनरेवं विधाय) फिर इन अगले मन्त्रों से पूर्व अनुसार

ओ३म् अर्य्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत।
स नो अर्य्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मापतेः स्वाहा। इदमर्य्यमणे ॥१॥

पहला आहुति अग्नि में छोड़ दे फिर सब वस्तु ले।

ओ३म् इयं नार्युपब्रूते लाजानावपंतिका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा। इदमग्नये० ॥२॥

दूसरी आहुति अग्नि में छोड़ दे, फिर सब वस्तु ले।

ओं इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियँ स्वाहा। इदमग्नये० ॥३॥ तीसरी आहुति अग्नि में छोड़ दे।

(ततो वधूदक्षिणहस्तसांगुष्ठं गृह्णाति वरः)

वर कन्या के सीधे हाथ का अंगूठा दुबारा अपने सीधे हाथ में थामकर ये मन्त्र पढ़े।

ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः। भगोऽर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः॥४॥ अमोहमस्मि सात्वँ सात्वमस्यमोऽहम्। सामाहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्॥ ५॥ तावेव विवहावहै सह रेतो दधावहै बहून्॥ ६॥ ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतमिति ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अथ वधूमग्रे मुत्तरतः प्राङ्मुखः पूर्वोक्तकल्पित दृषदु-पलं दक्षिणपादेनारोहयति वरः)

कन्या इस मन्त्र से पूर्व को मुंह करके अगाड़ी होकर अपने सीधे पैर का अंगूठा (पाषाण) बाट के लगावे (सुमेरुपर्वत)।

ओं आरोहेमश्मानमश्मेव त्वँ स्थिरा भव । अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः। (अथ गाथां गायन्ति)

हम उसका गान करते हैं जो स्त्रियों का उत्तम पतिव्रतादि यश है।

(ओं सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति ॥ इत्यादि ॥

(ततोऽग्रे वधू पश्चाद्वरःप्रणीता ब्रह्मासहितमग्निंप्रदक्षिणां (कुरुतस्ततो वरपठनीयो मन्त्रः)

कन्या अगाड़ी वर पिछाड़ी ब्रह्मा वा प्रणोता सहित अग्नि की परिक्रमा करे और यह मन्त्र पढ़े।

ओं तुभ्यमग्ने पर्य्यवहन्सूर्या वहतु ना सह। पुनः पतिभ्यो जाया दा अग्ने प्रजया सहेति (पठन् द्विवारं परिक्रमत्)

यह ऊपर का मन्त्र पढ़कर दूसरी परिक्रमा करवावे, दूसरा फेरा हुआ। (पुनरेवं विधाय) खील और जांड़ के पत्ते व लकड़ी देकर कन्या को अगाड़ी वर को पिछाड़ी करके इन मन्त्रों से पूर्वानुसार फिर तिबारा आहुति दिलवावे।

ओं अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स नो अर्य्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा। इदमर्यमणे ॥१॥ पहली आहुति दे।

दूसरी आहुति देने के लिए सब वस्तु हाथ में लेकर यह मन्त्र पढ़े।

ओं इयं नार्युपब्रूते लाजानावपंतिका आयुष्मानस्तु मे परिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा। इदमग्नये० ॥२॥

दूसरी आहुति अग्नि में छोड़े। अब तीसरी आहुति देने के लिए सब वस्तु हाथ में ले, यह नीचे लिखा मन्त्र पढ़े।

ओं इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियꣳ स्वाहा। इदमग्नये०॥३॥

तीसरी आहुति अग्नि में छोड़े।

(ततो वधूदक्षिणहस्तंसांगुष्ठंम् गृह्णाति वरः)

वर कन्या के सीधे हाथ का अंगूठा तिबारा अपने सीधे हाथ में थामकर नीचे लिखा मन्त्र पढ़े।

ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः। भगोऽर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥४॥ अमोहमस्मि सा त्वꣳ सा त्वमस्यमोऽहम्। सामाहमस्मि ऋक्त्वं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्यौरहं पृथिवी त्वम् ॥५॥ तावेव विवाहवहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून् ॥६॥ ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुशरदः शतमिति ॥७॥

(अथ वधूमग्रे रुत्तरतः प्राङ्मुखो पूर्वापकल्पित दृषदुपलं दक्षिणपादेनारोहयति वरः)

कन्या अगाड़ी होकर उत्तर में जो पाषाण (बाट) रक्खा है अपने सीधे पैर का अंगूठा, पूर्वाभिमुख हो उसके लगावें।

ओं आरोहेममश्मानमश्मेव त्वंꣳ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतो ऽवबाधस्व पृतनायतः (अथ गाथां गायन्ति)

हम उसका गान करते हैं जो स्त्रियों का उत्तम पतिव्रतादि यश है।

ओं सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति ॥ इत्यादि ॥

ततोऽग्रे वधू स्पश्चाद्वरः प्रणीताब्रह्मासहितमग्निप्रदक्षिणां कुरुतस्ततो वरपठनीयो मन्त्रः)

कन्या अगाड़ी, वर पिछाड़ी, ब्रह्मा तथा प्रणीता सहित अग्नि की परिक्रमा करे, वह यह मन्त्र पढ़े।

ओं तुभ्यमग्नेपर्य्यवहन्त्सूर्या वहतुना सह।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुनः पतिभ्यो जायां दाग्ने प्रजया सहेति (पठन् परिक्रमेत्)

[पुनरेवं तृतीयां परिक्रमां कुर्यात्]

फिर तीसरी परिक्रमा करे ।

[सांगुष्ठहस्तग्रहणत्रयं अश्मारोहणत्रयं गाथा गान-त्रयं अग्नि-प्रदक्षिणा त्रयं च [संपद्यते]

हाथ भी तीन बार ग्रहण हो चुका अश्मारोहण (बाट) भी हो चुका पाधा गाथा भी कह चुका, अग्नि की परिक्रमा भी तीन हो चुकी ।

[ततोऽवशिष्टलाजैः कन्याभ्रातृदत्तै रंजलिस्थशूर्पकोणेन वधूर्जुहोति]

बची हुई जो खील है कन्या का भाई छाज की कोण से कन्या के हाथों पर रक्खे और कन्या अग्नि में उसकी आहुति दे

ओं भगाय स्वाहा । इदं भगाय० ॥

[अथाग्रे वरः पश्चात् वधूस्ततः तूष्णीमेव चतुर्थपरिक्रमणां कुरुतः]

फिर कन्या को पीछे और वर को अगाड़ी कर अग्नि की चुपचाप परिक्रमा करावे । इति चौथा फेरा समाप्त ।

(ततो वरश्च कन्या च उपविश्य ब्रह्मणान्वारब्धः)

वर कन्या दोनों अपने अपने आसन पर बैठ जायें फिर पाधा कुशा के ब्रह्मा से मिले अर्थात् कुशा अपने घोटे से ब्रह्मा तक मिला लेवे ।

[आज्येन प्राजापत्यं जुहुयात्]

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर पाधा अग्नि में घी की आहुति दे।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये०। इति मनसा० यह आहुति मन में बोले।

[अत्र प्रोक्षणीपात्रे आहुति शेषाज्यप्रक्षेपः]

स्रुवे से प्रोक्षणी पात्र में घी का छींटा दे।

तत आलेपनेनोत्तरोत्तर कृतसप्तमण्डलेषु सप्तपदाक्रमणं वरः कारयेत्।

अब पाधा पृथ्वी पर ७ जगह चावल धरे। वर धोरे दक्षिण से उत्तर की तरफ बराबर बराबर। फिर वर कन्या दोनों उत्तराभिमुख खड़े हो जावें। वर से कन्या दाहिने भाग में होवे। एक-एक पद के बढ़ने के साथ अपना-अपना सीधा पांव आगे धरें, पहले वर पीछे कन्या। जिस जगह से सीधा पैर उठाया है उसी जगह बायां पैर धरते जावें और धीरज से उत्तर की तरफ को चलते जावें।

* (तत्र एकामिषे विष्णुस्त्वानयतु)

वर कन्या से ऐसा कहे कि—

सखे पत्नी! विष्णु स्वरूप मैं घर के अन्नादिक के लिए तेरा एक पद रखता हूं अर्थात् घर में मेरे अन्नादि की मालकिन तू है।

(द्वे ऊर्ज्जे विष्णु स्त्वानयतु)

हे सखे! पत्नी दूसरे तेरा भी यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ उर्ज्जे नाम (बलाय) तू बलवती हो। इसलिए तेरा दूसरा पद रखता हूं।

(त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वानयतु)

३—तेरा भी यश बढ़े किमर्थं काहे के अर्थ, (रायस्पोषाय) और धन की वृद्धि हो, तीसरा पद रखवाता हूं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(चत्वारि मायो भवाय विष्णुस्त्वानयतु)

४–तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ, (मायोभवाय) सुविद्या रूपी माया का सुख प्राप्त हो । चौथा पद रखवाता हूं ।

(पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु)

५–तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ, (गवादिभ्यःपशुभ्यः) गौ आदि पशुओं को भी सुख प्राप्त हो । पांचवां पद रखवाता हूं ।

(षड् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु)

६–तेरा भी यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ (षड्ऋतुभ्यः) छहों ऋतुओं में तुझको सुख प्राप्त हो । छठा पद रखवाता हूं ।

(सखेसप्तसदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु)

७–तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ, विष्णु जो भगवान् हैं तुझको सातों पदों की प्राप्ति हो, भू आदि जो सात लोक हैं उनमें विख्यात हो जैसे अरुन्धती, जानकी और पतिव्रता का धर्म भी हो । (सातवां पद) वर और कन्या अपने-अपने आसन पर बैठ जावें ।

(मण्डपं मधुपर्कश्च लाजहोमः परिक्रमा
यावत्सप्तपदी नैव तावत् कन्या कुमारिका)

अर्थ—मण्डप छावने से तो घर की शोभा हुई और मधुपर्क के खाने से वर के देह की शुद्धि हुई और लाज जो खील है उनके हवन करने से देवता प्रसन्न हुए और परिक्रमा से अग्नि प्रसन्न हुई जब तक सप्तपदी न हो तब तक कन्या की कुमारी संज्ञा है ।

(कन्यायाः सप्त वाक्यानि)

यह सात वचन कन्या के हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(प्रथमं) यदि यज्ञं कुर्यात्तस्मिन्नपि मम सम्मतिं गृह्णीयात् ।

(प्रथम) जो यज्ञ करें उसमें मेरी सम्मति लें ।

(२) यदि दान कुयात्तस्मिन्नपि मम सम्मतिं गृह्णीयात् ।

दूसरे को जो दान करें उसमें भी मेरी सम्मति लें ।

(३) अवस्थात्रये मम पालनं कुर्यात् ।

तीसरे जो तीन अवस्थायें हैं, बाल , युवा, बुढ़ापा उनमें भी मेरी पालना करे ।

(४) धनादिगोपने मम सम्मतिं गृह्णीयात् ।

चौथे द्रव्य आदि कहीं पर धरें तो उनमें भी मेरी सम्मति लें ।

(५) गवादिपशूक्रयविक्रये मम सम्मतिं गृह्णीयात् ।

पांचवें गाय, बैल, घोड़ा, हाथी, पशु खरीदें या बेचें तो उसमें भी मेरी सम्मति लें ।

(६) वसन्तादि षटऋतुषु मम पालनं कुर्यात् ।

छठे वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर छहों ऋतुओं में मेरी पालना करें ।

(७) सखीषु मम हास्यं न कुर्यात् तथा च कटुवाक्यं न वदेत् । तदाहं भवतां वामांगे आगच्छामि ।

सातवें साथ की सहेलियों में मेरी हंसी न करें तथा बुरा वचन न कहें । तब मैं तुम्हारे बायें अंग आऊं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(पुनः चत्वारि वरवाक्यानि)

ये चार वाक्य वर के हैं सो वर पढ़े।

उद्याने मद्यपाने च पितुर्वेश्मनिवेशने।
आज्ञाभङ्गो न कर्तव्यः वरवाक्य चतुष्टयम् ॥

अर्थ—उद्यान जो (जंगल) है अर्थात् वन वहां न जाए, दूसरे मद्य जो शराब है जो मनुष्य पिये हुए हो उसके सामने न जाए, तीसरे अपने पिता के यहां मेरी आज्ञा के बिना न जाए, चौथी मेरी आज्ञा भंग न करे।

बहुत से विद्वान् इस सप्तपदी को भी कहते हैं।

(अथ द्वितीया सप्तपदी)

आदौ धर्मधरा कुटुम्बसुखदा मिष्टप्रियाभाषिणी।
क्रोधालस्यनिवारिका सुखकरी आज्ञानुगावर्तिनी ॥
शास्त्रानन्दप्रवृद्धशासनपरा धर्मानुगा सादरम्।
एते सौम्यगुणा वसन्ति सततं वामेहि सा त्वं भव ॥१॥

टीका-(१) प्रथम तो हमारे कुल का जो धर्म है सो तू धारण करे तो बायें अंग आ, (२) हमारा जो कुटुम्ब है उसको सुख दे तो बायें अंग आ, (३) धर्मानुकूल वृद्धजनों के उपदेश को सादर स्वीकार करे तो बायें अंग आ, (४) यश और सुख दे तो बायें अंग आ, (५) मेरी आज्ञा का पालन करे तो बायें अंग आ, (६) मेरे जो माता-पिता हैं उनकी टहल करे तो बायें अंग आ, (७) मेरी जो बहनें हैं उनसे क्रोध न करे तो बायें अग आ, ये गुण तेरे अन्दर हों तो बायें अंग आ। बहुत से आचार्य प्रथम सप्तपदी इस प्रकार भी कहते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य पुरुषस्कंधे स्थितात्कुम्भादाम्र-पल्लवेनोदकमानीय तेन वरो वधूमभिषिंचति)

जो ब्राह्मण दृढ़ कलश ले रहा है, उसके जल का आम के पत्ते से वर कन्या के ऊपर छींटा लगावे फिर अपने ऊपर। मन्त्र—

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजमिति

(अनेन पुनस्तथैव तस्मादेव कुम्भात्तथैवानीत-जलेन वधूं वरोऽभिषिंचति)

फिर उसी प्रकार वरुण घड़े में से वर कन्या के शरीर पर जल का नीचे लिखे मन्त्र से छींटा लगावे।

ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऊर्ज्जे-दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः। उश-तीरिवमातरः। तस्मा ऽअरगंमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जन यथा च नः॥

(तत्सूर्यमुदीक्षस्वेति वधूं संबोध्य वरो वदेत्)

वर कन्या से सूर्य के दर्शन को कहे, तब कन्या सूर्य को देखे वर नीचे लिखा मन्त्र पढ़े।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शत श्रृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ।

(अस्तगंते सूर्येध्रुवमुदीक्षस्व)

रात्रि हो तो वर कन्या से ध्रुव तारे का दर्शन करने के लिए कहे तब कन्या तारे को देखे, वर यह मन्त्र पढ़े ।

ॐ ध्रुव मसिध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्या मयिमह्यं त्वादाद्बृहस्पतिर्मया पत्याप्रजा- वती सञ्जीव शरदः शतम् ।

(अथ वरो वधू दक्षिणांसस्योपरि हस्तं नीत्वा तस्या हृदयमालभेत)

वर कन्या के सीधे कन्धे पर अपना सीधा हाथ रखकर कन्या के हृदय से लगावे, यह मन्त्र पढ़े ।

ओं मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्त- मनुचित्तं तेऽस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।

(वधूः वरस्य वामभागे उपविशति)

कन्या को वर की बायीं ओर बिठा दे फिर उसी समय वर को दाहिनी ओर बिठा दे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अथ सुवर्णां गुलीयकेन वधूमभिमन्त्रयति वरः)

वर सोने की अंगूठी से कन्या की मांग में रोली भरे। मन्त्र—

ओं सुमगंलीरियं वधूरिमा ं समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै य दत्वाथास्तं-विपरेतन॥

(अथस्विष्टकृद्धोमः) पाधा अग्नि में घी की आहुति दे।

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये॥

ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इद मग्नये स्विष्टकृते० ॥

(स्रुवावशिष्टाज्यस्य पोक्षणीपात्रे पक्षेपः)

स्रुवे से प्रोक्षणी पात्र में घी का छींटा दे।

(वरेण संस्त्रव पाशनम्)

वर उस स्रुवे के घी को मुंह से लगावे फिर आचमन कर हाथ धोवे।

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां ०

(ततो वरः पूर्ण पात्रं दक्षिणां च ब्रह्मणे दद्यात्)

जो ब्रह्मा बना है उसको वर पूर्णपात्र में दक्षिणा रखकर संकल्प करे।

ओं अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमेमासे० अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्माहं कृतैतद्विवाहहोम-कर्म्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तुः प्रतिष्ठार्थं-इदंपूर्णपात्रदानं प्रजापतिदैवतं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमुक गोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(दान प्रतिष्ठासंकल्पः)

अद्येत्यादि० पूर्णपात्रदानप्रतिष्ठा सांगताफलप्राप्त्यर्थं इमां दक्षिणां तुभ्यमहम् सम्प्रददे।

(ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोक ब्रह्मा की गांठ खोल दें।

(वरः वधूः प्रणीताजलेनपवित्रेगृहीत्वा शिरः संमृज्य)

वर कन्या दोनों पवित्री से अपने ऊपर प्रणीता के जल का छींटा दें॥

ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति॥

(इत्यैशान्यां सपवित्रां सजलां प्रणीतां न्युब्जीकरणम्)

प्रणीता पात्र को पवित्रे सहित ईशान दिशा में उल्टा रख दे।

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यंच वयं द्विष्मः॥

(ततस्तरणाक्रमेण बर्हिरुत्थाय आज्येनावघार्य वक्ष्यमाणमंत्रेण हस्तेनैव जुहुयात्।)

वेदी के चारों तरफ की सब कुशा जिस प्रकार रक्खी थी उसी प्रकार दूर्वा उठा कर घी लगाकर अग्नि में डाल दे इस मन्त्र से।

ओं देवाः गातुं विदोगातुं वित्वा गातु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मितः । मनसस्पत इमं देवयज्ञ ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥ इति बर्हिहोमः ।

(तत उत्थाय बध्वादक्षिणहस्तेन स्पृष्टैः स्त्रुवस्थघृतपुष्पफलैः पूर्णाहुतिं कुर्यात्)

कन्या को खड़ी करके उसके सीधे हाथ में स्त्रुवा दे उस पर घी फूल सुपारी रखकर अग्नि में छुड़वा दे। मन्त्र—

ओं मूर्द्धानं दिवो अरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम्। कवि ँ साम्राज्यमतिथिंजनाना मासन्नापात्रं जनयन्तदेवाः स्वाहा। इदमग्नये०।

(पुनः अग्नौ घृतधारां दद्यात्)

उसके ऊपर घी की धार छोड़ें। मन्त्र—

ओं वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसिसहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥

(उपनिवेश्य स्त्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रेण)

स्त्रुवे पर भस्म लगाकर सीधे हाथ की अनामिका से वर कन्या दोनों के लगावे—

ओं त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे

(माथे से)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओं कश्यपस्य त्र्यायुषम्-इति ग्रीवायाम्

(गले से)

ओं यद्देवेषु त्र्यायुषम्-इतिदक्षिणबाहुमूले

(सीधे कन्धे से)

ओं तन्नो * अस्तु त्र्यायुषम्-इति हृदये

(छाती से)

(कन्या वरश्च छायापात्रदानं कुर्यात्)

कन्या वर दोनों छाया पात्र का दान करें, कांसी के पात्र में घी भर के अपना मुंह देखें उसमें चांदी की दक्षिणा डालें या पञ्च रत्न, फिर संकल्प करें।

अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमेमासे० अमुकगोत्रोहममुक शर्म्माहं मम विवाह-सांगताफलप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जयदेवता प्रीत्यर्थं-इदं छायापात्र घृतप्रपूरितं कांस्य-पात्रदक्षिणासहितं यथानामगोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

यह छायापात्र डाकौत या व्यास को दे, फिर दान प्रतिज्ञा का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रोऽहममुकनाम शर्म्माहं इदं छायापात्रदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थममुक गोत्रा-

---

*जब कन्या के भस्मी लगावे तो तन्नो की जगह तत्ते कहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यामुकब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

(हस्तौ प्रक्षाल्य) हाथ धो डाले। मन्त्र—

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां०

(ब्राह्मणो वरः गां ददाति ग्रामं राजन्यः–अश्वंवैश्यः, शूद्रो च दक्षिणां यथाशक्ति। कर्मकर्तृ संकल्पः)

विवाह कराने की दक्षिणा में ब्राह्मण गाय, क्षत्रिय ग्राम, वैश्य घोड़ा अन्य जाति दक्षिणा दे पहले कन्या के पिता से संकल्प करावे।

अद्येत्यादिअमुक गोत्रः अमुकशर्म्माहं आत्मनः पुत्री-विवाहसांगताफलप्राप्त्यर्थं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे। ब्राह्मण को दे दे

फिर दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

(वरः कर्मतृं संकल्पं कुर्यात् वर कर्मकर्त्ता का संकल्प करे।

अद्येत्यानि० अमुकगोत्रः अमुकशर्म्माहं मम विवाहसांगताफलप्राप्त्यर्थं श्रीयज्ञ-पुरुषनारायण प्रीत्यर्थं सवधूकोऽहममुक-गोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय पण्डिता-य तुभ्यमहं संप्रददे।

ब्राह्मण को दे फिर दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अमुक गोत्रायः अमुकशर्म्माहं मम विवाह-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीयज्ञनारायण प्रीत्यर्थं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

(वर कन्ययोः तिलकं कुर्यात् पण्डित वर कन्या के तिलक करे

आयुष्कामो यशस्कामः पुत्रकामस्तथैवच ।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते ।

पाधा अपने हाथ में फूल चावल लेकर वर कन्या को आशीर्वाद दे, ये मन्त्र पढ़े ।

श्रीकृष्णः कुशलं करोतु भवतां धाता प्रजानां सुखम् । निर्विघ्नं गणनायकः प्रतिदिनं भानुः प्रतापोदयम् ॥ शम्भुस्ते धनधान्यकीर्तिमतुलां दुर्गाऽरिनाशं सदा । गगां ते खलु पापहा निशिदिनं लक्ष्मीस्सदा तिष्ठतु ॥

पण्डित अपने हाथ के फूल चावल वर को दे, फिर पुण्यक्षेत्र सामवेदी कराये और इसके पश्चात् अग्नि में १ गिरवाकर चौरी रखकर तौला उलटा करदे फिर पाधा वर और कन्या के पिता से गणेशजी पर चावल छुड़वाये । (इस मन्त्र से)

ओं गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ ! स्वस्थानं परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ इति विसर्जनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यजमान ऐसा कहे कि गणेशजी और लक्ष्मीजी तो हमारे गृह में रहो और सब देवता अपने-अपने स्थान को जाइये। पाधा तिलक करे और सेवल कर दे। फिर वर आगे कन्या पीछे थापे के आगे जाये।

॥ इति विवाह संस्कार विधि समाप्त ॥

(अथ शय्यादान संकल्पः) अब पलंग का संकल्प करे।

ततः दक्षिणशिरसमुत्तरपादां तूलकोषधनादिपुरस्कृतांवस्त्राभरणपात्राद्यलंकृतां खट्वां वरकन्यारोहणपूर्वकां पूर्वदिक्पार्श्वे करक्तसूत्रवद्धां कन्यापिता पत्यासह ग्रन्थिबन्धनं कृत्वा खट्वा बद्धरक्तसूत्रजलाक्षतदक्षिणाभिः सह संकल्प कुर्यात्।

पलंग का सिरहाना दक्षिण की ओर, पांयते उत्तर की ओर करके उसके ऊपर धन, वस्त्र और तीयल बर्तन छाकादि समीप धरकर कन्या वर दोनों उत्तर को मुंह करके बैठें और कन्या का पिता अपनी स्त्री से गठजोड़ा बांधकर पूर्व मुख हो पूर्व की ओर के सिरहाने के पावे में कलावा बांधकर अपने सीधे हाथ में उस कलावे को थामकर जल चावल पैसा लेकर संकल्प करे।

ओं अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे० अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोहं अमुकशर्म्माहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थंआत्मनःकन्याविवाहे श्रीयज्ञपुरुषनारायणप्रीत्यर्थं इमां शय्यां सोपस्करां धनवस्त्राभरणभूषितां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धातुपात्र संहितां विविधसिद्धान्नसहितां प्रजापतिदैवतां रजतसुवर्णमणिभूषण-भूषितां अमुकगोत्राय अमुक प्रवरायामुक-नाम्ने वराय विष्णुरूपाय सपत्नीकाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥

वह कलावा और पैसा वर को दे।

(वरः स्वस्तीति प्रवचनम्) वर ऐसा कहे।

(दानप्रतिष्ठा-संकल्पं कुर्यात्)

अब कम से कम एक रुपया जल चावल लेकर संकल्प करे।

कृतैतत्कन्यादानप्रतिष्ठासांगतासिद्ध्यर्थं करस्थसुवर्णमग्निदैवतं अमुकनाम्ने वराय तुभ्यमहं संप्रददे।

यह भी वर को ही दे दे।

॥ इति विवाह पद्धतिः ॥

॥ ओ३म् ॥

अथ चतुर्थी कर्म पूर्व नियम

वधूवरौत्रिरात्रं अक्षारलवणाशिनौ, अधः शयानौ निर्मैथुनौ स्याताम्। वधू वर दोनों विवाह के दिन से तीन दिन तीन रात्रि पर्यन्त खार, नमक न खावें पृथ्वी पर बिस्तरा बिछाकर सोवें और परस्पर प्रसंग न करें। ऐसा सूत्र का प्रमाण है॥

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूत्रम्–सम्वत्सरं न मिथुनमुपेयातां द्वादशरात्र षड्रात्रं त्रिरात्रं त्रिरात्रमन्तत इति।

अर्थ—विवाह दिन से एक साल तक, बारह रात्रि तक अथवा छः रात्रि तक अथवा तीन रात्रि तक स्त्री प्रसंग न करें।

संवत्सरादिविकल्पास्तु शक्त्यपेक्षया व्यवस्थिताः आतुराणां संवत्सरादित्यागाशक्तौत्रिरात्र पक्षाश्रयोऽपि।

अर्थ—-संवत्सरादिक का कथन शक्ति के अनुसार कहा है कि वधू वर प्रबल हों और प्रसंग के लिए संवत्सर का त्याग न कर सकें इसलिए त्रिरात्रि के बाद चतुर्थी कर्म होने के पश्चात् पांचवीं रात्रि में प्रसंग करने का शास्त्रोक्त विधान है। अत्र प्रमाणम्—-

चतुर्थी कर्म्मानन्तरं पंचम्यादि रात्रिषु अभिगमनं बोध्यम्। आप्रदानाद् भवेत्कन्या प्रदानानन्तरं वधू पाणिग्रहे तु पत्नी स्याद् भार्या चातुर्थकर्म्मणि।

अर्थ—-दान करने के पहिले कन्या संज्ञा है, दान करने के बाद वधू है, पाणिग्रहण के बाद पत्नी संज्ञा है चतुर्थी कर्म के बाद भार्या संज्ञा होती है। इसलिए चतुर्थी कर्म के बाद भार्या संज्ञा होने पर परस्पर प्रसंग करना शास्त्रोक्त विधान है।

अथ चतुर्थी कर्मविधिः प्रारम्भः

नीचे लिखे अनुसार चतुर्थी कर्म करावे।

(ततश्चतुर्थ्यां अपररात्रौ चतुर्थी कर्म्म)

अर्थ—-चौथे दिन को अर्ध रात्रि में चतुर्थी-कर्म करावे।

(तच्च गृहाभ्यान्तर एव कार्य्यम्)

और यह चतुर्थी कर्म घर के अन्दर ही करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत उद्धर्तनादि कृत्वा युगकाष्ठमुपविश्य स्नात्वा शुद्ध वस्त्रं परिधाय गृहं प्रविश्य वधूवरौ प्राङ्मुखौ भवतः ।

अर्थ—उबटनादि मलकर दोनों पटड़ों पर बैठकर स्नान करें, शुद्ध वस्त्र पहनकर घर में जा वधूवर दोनों आसन पर पूर्व को मुख करके बैठ जावें ।

आचार्यो नवगृहादिवेदिकां कृत्वा गणपत्यादिपूजनं कारयेत् । पंडित नवग्रहादियों की वेदी बनाकर गणेश आदि सब देवताओं का वरवधू से पूजन करावे ।

ततः कुशकण्डिकारम्भः—

फिर पंडित क्रम से पूर्व लिखित रीति से कुशकण्डी करावे ।

कुशकण्डिकान्तेऽग्रिममन्त्रैः आहुति दद्यात् ।

कुशकण्डी के बाद आगे लिखे हुए मन्त्रों से आहुति दे ।

ओं प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये (इति (मनसा) ओं इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय (इत्याघारौ) ओं अग्नये स्वाहा इदमग्नये । ओं सोमाय स्वाहा इदं सोमाय (इत्याज्यभागौ) तत आज्याहुतिपंचाहुत्ये स्थालीपाकाहुतौ च प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेष-घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ।

फिर घी की पांच आहुतियों में और स्थालीपाकनामी घी, दूध, बूरा, आटा, और किशमिश इनको पकाकर आहुति दे और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हर एक आहुति के बाद स्रुवे में बचे हुए घृत को प्रोक्षणी पात्र में डालते जावें। (ततो ब्रह्मणान्वारब्धं विना) अर्थ—ब्रह्मा से मिली हुई कुशा को हटाकर इन आहुतियों को दे।

ओ३म् अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा॥

(इदमग्नये) ॥ १ ॥ ओं वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसिः ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै प्रजाघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा (इदं वायवे) ॥ २ ॥ ओं सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मण स्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पशुघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा (इदं सूर्याय) ॥ ३ ॥ ओं चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै गृहघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा। (इदं चन्द्राय) ॥ ४ ॥ ओं गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै यशोघ्नीतनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा (इदं गन्धर्वाय) ॥ ५ ॥ ततः स्थालीपाकेन जुहुयात्। फिर स्थाली पाक हलवे से नीचे लिखी आहुति दे। ओ३म् प्रजापतये स्वाहा (इति मनसा)

अग्न्याहुतिनवके हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः।

अर्थ—इन नौ आहुतियों को स्रुवे में बचे हुए घृत का प्रोक्षणीपात्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में छींटा देता जाए। अयं च होमो ब्रह्मान्वारब्धकर्तृकः इन आहुतियों को ब्रह्मा से उस हटी हुई कुशा को घांटे तक मिलाकर देवे (तत आज्यस्थालीकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः) फिर घी और स्थालीपाक से स्विष्टकृत् होम की आहुति दे।

ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते। (तत आज्येन) फिर घी की आहुति दे। ओं भूः स्वाहा इदं मग्नये। ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे। ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय। एता महाव्याहृतयः। ओंत्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाँसि प्रमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम्। ओं सत्वन्नोऽग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोअस्या उषसोव्युष्टौ अवयक्ष्व नो वरुणं रराणोवीहिमृडीकँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम्॥ ओं अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजँ स्वाहा (इदमग्नये)॥ ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तस्तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः। ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमश्रथाय अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय। (एता प्रायश्चित्तसंज्ञका)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० (इति मनसा) इदं प्रजापत्यम् (ततः संस्त्रव प्राशनम्)

(ततः आचम्य) फिर वर वधू स्त्रुवे में लगे हुए घी को अनामिका उंगली से लगाकर चाटें, फिर आचमन करें।

गङ्गाविष्णु० ॥ इस मन्त्र से।

(हस्तौ प्रक्षालनम्) फिर हाथ धोवें

(अथ पूर्णपात्र दानम्) अब पूर्णपात्र संकल्प करे।

अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे इत्यादि अस्यां रात्रौ कृते-तच्चतुर्थी होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थ मिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(इति पूर्णपात्रदक्षिणां दद्यात्) यह पूर्ण पात्र और दक्षिणा ब्रह्मा को दे। (स्वस्तीति प्रतिवचनम्) ब्रह्मा स्वस्ति ऐसा कहे।

(ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोक्षः) फिर ब्रह्मा की गांठ खोल दे

(ततः पवित्राभ्यां शिरसंमार्जनम्) फिर वरुण जल का पवित्रे से वरवधू के ऊपर छींटा दे, इस मन्त्र से -- ओं सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु। (ततः ऐशान्यांदिशि प्रणीता-पात्रं न्युब्जीकुर्यात्) फिर ईशान दिशा में प्रणीता पात्र को उल्टा करके रख दे, इस मन्त्र से ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यंच वयं द्विष्मः (ततःपरिस्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्य घृताक्तं हस्तेनैव जुहुयात्)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर जिस प्रकार वेदी के चारों ओर कुशा धरी थी उसी प्रकार उन कुशाओं को उठाकर घृत में भिगोकर में अग्नि डालदे, इस मन्त्र से

ओं देवा गातु विदा गातुं वित्वा गातुमितः मनसस्पत इमं देवयज्ञँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा (ततः पृथूदकपात्रस्थं आम्रपल्लवेन जलमानीय मूर्ध्नि वरो वधूमभिषिचेत्)।

अर्थ—फिर कलश के जल का आम के पत्ते से वर वधू के ऊपर छींटा दे इस मन्त्र से। **ओं या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नीं निन्दिता तनुर्जारघ्नीतत एनां करोमि सा जीर्यत्वं मया सह श्री अमुक देव्या।**

(ततो वधूं स्थालीपाक प्राशयति वरः)

फिर वर वधू को स्थालीपाक हलवा खिलावे, इन मन्त्रों से **ओं प्राणैस्ते प्राणान्संदधामि। ओं अस्थिभिरस्थीनि संदधामि। ओं त्वचा ते त्वचं संदधामि।**

(ततो वधूहृदयं स्पृष्ट्वा वरः पठेत्)

फिर वर वधू के सीधे कन्धे पर अपना सीधा हाथ लाकर उसके हृदय से लगावे। इन मन्त्रों से—

ओं यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रियं वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतमिति। (अथ कंकणमोक्षणादीनि युतग्रन्थिविमोचादीनि आचारप्राप्तानि)

फिर वर-वधू के कंगना गांठ लोकरीति के अनुसार खोल दे इस मन्त्र से:—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कंकणं मोक्षयाम्यद्य रक्षांसि न कदाचन
माये रक्षां स्थिरां दत्वा, स्वस्थानं गच्छ कंकण ॥
तत उत्थाय वधू दक्षिणहस्तस्पृष्टस्त्रुवेण घृत फल पुष्प पूर्णोनस्त्रुवेण पूर्णाहुतिं कुर्यात। फिर घी फल फूल स्त्रुवे पर रखकर वधू के सीधे हाथ से अग्नि में पूर्णाहुति दिलवाये।
मन्त्र—ओं मूर्द्धानं दिवो अरतिम्पृथिव्या वैश्वानर मृतमा जातमग्निकविँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जन यन्तु देवाः स्वाहा। (इदमग्नये) ततः स्त्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रेण गृहीत भस्मन। फिर स्त्रुवे में की भस्म लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुलि से उस भस्म को वर—वधू के अंगों में लगावे।
त्र्यायुषं जमदग्नेः—इति—ललाटे (माथे पर) ओं कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् (गले से) ओं यद्देवेषुत्र्यायुषमिति दक्षिणबाहूमूले (सीधे कन्धे से) तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदय (छाती से)

वधू के भस्म लगाते समय तन्नो इसकी जगह तत्ते ऐसा पढ़ना। फिर यथाशक्ति कर्म कराने वाले आचार्य को, ब्रह्मा को और आहुति देने वाले को व अन्य ब्राह्मणों को भी बहुत-बहुत दक्षिणा दे।

इति साङ्गा विवाहपद्धतिः समाप्ता।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

५०१०७० टैक्नीकल प्रिंटिंग प्रेस, (निकट दिल्ली) में मुद्रित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जापान, चीन, बंगाल, आसाम, कामरूप व मिश्र देश का "सच्चा"

काला जादू

जादू विद्या के सम्बन्ध में सब लोग कुछ न कुछ जानने के इच्छुक रहते हैं। इस पुस्तक में जादू एवं बाज़ीगरी से सम्बन्धित सैंकड़ों प्रकार के करिश्मों का वर्णन किया गया है, जिन्हें जानकर आप गोगिया पाशा, सरकार, देवकुमार को भी भूल जायेंगे। अपने मनोरंजन के साथ साथ दूसरों को आश्चर्य चकित कर देने वाली विधियां।

सजिल्द 12/- रु॰ देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

सन् 1971 में क्या होने वाला है?

आगामी वर्ष में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारी उलट फेर होने वाले हैं। करोड़ों लोगों की किस्मत का फ़ैसला करने वाले शासकों तथा आम जनता को भी आश्चर्यजनक घटनाएं देखने को मिलेंगी।

नया वर्ष आपके भाग्य, धन, व्यवसाय, स्वास्थ्य, सन्तान नौकरी, विवाह, प्रेम, यात्रा, मामले-मुकद्दमे, शत्रु-मित्र, एवं परिवार आदि के लिये कैसा रहेगा? इसकी दैनिक जानकारी प्राप्त करने के लिये शुभ चौघड़िया मुहूर्त में विद्वान ज्योतिषी द्वारा निर्मित तथा हमारे यहां से प्रकाशित श्री बापू राष्ट्रीय मशहूर जंत्री मंगाकर पढ़िये। मू॰ 2/- रु॰ डा॰ ख॰ 2/- पृथक

नोट:- 2/50 M.O. भेजकर एक जंत्री बुक पोस्ट द्वारा मंगालें।

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

इस घोर कलिकाल में मनवांछित फल प्राप्त करने के लिये देवी देवताओं की उपासना ही सर्वोत्तम साधन है।

निम्न लिखित पुस्तकें आज ही मंगाइए।

राम उपासना	6/- रु॰		
कृष्ण उपासना	6/- रु॰	भैरव उपासना	6/- रु॰
विष्णु उपासना	6/- रु॰	लक्ष्मी उपासना	6/- रु॰
शिव उपासना	6/- रु॰	गायत्री उपासना	6/- रु॰
गणेश उपासना	6/- रु॰	दुर्गा उपासना	10/- रु॰
सरस्वती उपासना	6/- रु॰	काली उपासना	6/- रु॰
हनुमान उपासना	6/- रु॰	देवी देवताओं की आरतियां	6/- रु॰

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

जन्मतिथि तथा नाम के अक्षरों द्वारा —
— जीवन का हाल जानिए

अङ्क ज्योतिर्विज्ञान

लेखक - राजेश दीक्षित

इस पुस्तक की सहायता से प्रत्येक स्त्री-पुरुष अपने जन्म की तारीख तथा नाम के अक्षरों द्वारा प्रेम, विवाह, व्यवसाय, धन-प्राप्ति भाग्योदय तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान में घटनेवाली घटनाओं की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकता है। जन्मराशियों का विस्तृत फलादेश भी इस पुस्तक में दिया गया है। मूल्य-साढ़े सात रुपया
पृष्ठ २०४

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार दिल्ली 6

सरल ज्योतिष परिचय

ज्योतिष के सम्बन्ध में प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। ज्योतिष सम्बंधी श्रेष्ठ साहित्य का परिचय भी इससे प्राप्त होगा। अनेकों चित्र, मू॰ डेढ़ रु॰ 1/50 M.O. भेजकर पुस्तक मंगालें।

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6,

स्वप्न विज्ञान

(ले॰ सत्यकाम सिद्धांतशास्त्री)

स्वप्न में भिखारी से राजा बनता है, तो कोई राजा से कंगाल। स्वप्न में विदेश यात्रा मिल मालिक बनना, हवाई जहाज़ या रेल का सफ़र, या कोई दुर्घटना आदि अनेकों, तरह तरह के स्वप्न होते हैं और प्रत्येक का फल भी पृथक होता है।

इस पुस्तक में हर तरह के लगभग १२०० स्वप्नों के फल लिखे गये हैं।
मू॰ 8/25 सवा आठ रु॰, डा॰ ख॰ अलग

देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूत्रम्-सम्वत्सरं न मिथुनमुपेयातां द्वादशरात्रं षड्रात्रं त्रिरात्रं त्रिरात्रमन्ततः इति ।

अर्थ—विवाह दिन से एक साल तक, बारह रात्रि तक अथवा छः रात्रि तक अथवा तीन रात्रि तक स्त्री प्रसंग न करें ।

संवत्सरादिविकल्पास्तु शक्त्यपेक्षया व्यवस्थिताः आतुराणां संवत्सरादित्यागाशक्तोत्रिरात्र पक्षाश्रयोऽपि ।

अर्थ--संवत्सरादिक का कथन शक्ति के अनुसार कहा है कि वधू वर प्रबल हों और प्रसंग के लिए संवत्सर का त्याग न कर सकें इसलिए त्रिरात्रि के बाद चतुर्थी कर्म होने के पश्चात् पांचवीं रात्रि में प्रसंग करने का शास्त्रोक्त विधान है । अत्र प्रमाणम्--

चतुर्थी कर्म्मानन्तरं पंचम्यादि रात्रिषु अभिगमनं बोध्यम् ।
आप्रदानाद् भवेत्कन्या प्रदानानन्तरं वधू पाणिग्रहे तु पत्नी स्याद् भार्या चातुर्थकर्म्मणि ।

अर्थ--दान करने के पहिले कन्या संज्ञा है, दान करने के बाद वधू है, पाणिग्रहण के बाद पत्नी संज्ञा है चतुर्थी कर्म के बाद भार्या संज्ञा होती है । इसलिए चतुर्थी कर्म के बाद भार्या संज्ञा होने पर परस्पर प्रसंग करना शास्त्रोक्त विधान है ।

अथ चतुर्थी कर्मविधिः प्रारम्भः

नीचे लिखे अनुसार चतुर्थी कर्म करावे ।

(ततश्चतुर्थ्यां अपररात्रौ चतुर्थी कर्म्म)

अर्थ--चौथे दिन को अर्ध रात्रि में चतुर्थी-कर्म करावे ।

(तच्च गृहाभ्यान्तर एव कार्य्यम्)

और यह चतुर्थी कर्म घर के अन्दर ही करना चाहिए ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत उद्वर्तनादि कृत्वा युगकाष्ठमुपविश्य स्नात्वा शुद्ध वस्त्रं परिधाय गृहं प्रविश्य वधूवरौ प्राङ्मुखौ भवतः।

अर्थ—उबटनादि मलकर दोनों पटड़ों पर बैठकर स्नान करें, शुद्ध वस्त्र पहनकर घर में जा वधूवर दोनों आसन पर पूर्व को मुख करके बैठ जावें।

आचार्यो नवगृहादिवेदिकां कृत्वा गणपत्यादिपूजनं कारयेत्। पंडित नवग्रहादियों की वेदी बनाकर गणेश आदि सब देवताओं का वरवधू से पूजन करावे।

ततः कुशकण्डिकारम्भः—

फिर पंडित क्रम से पूर्व लिखित रीति से कुशकण्डी करावे।

कुशकण्डिकान्तेऽग्रिममन्त्रैः आहुति दद्यात्।

कुशकण्डी के बाद आगे लिखे हुए मन्त्रों से आहुति दे।

ओं प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये (इति (मनसा) ओं इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय (इत्याघारौ) ओं अग्नये स्वाहा इदमग्नये। ओं सोमाय स्वाहा इदं सोमाय (इत्याज्यभागौ) तत आज्याहुतिपंचाहुतये स्थालीपाकाहुतौ च प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेष-घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः।

फिर घी की पांच आहुतियों में और स्थालीपाकनामी घी, दूध, बूरा, आटा, और किशमिश इनको पकाकर आहुति दे और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हर एक आहुति के बाद स्रुवे में बचे हुए घृत को प्रोक्षणी पात्र में डालते जावें। (ततो ब्रह्मणान्वारब्धं विना) अर्थ—ब्रह्मा से मिली हुई कुशा को हटाकर इन आहुतियों को दे।

ओ३म् अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा॥

(इदमग्नये)॥ १ ॥ ओं वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसिः ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै प्रजाघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा (इदं वायवे) ॥ २ ॥ ओं सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मण स्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पशुघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा (इदं सूर्याय)॥ ३ ॥ ओं चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै गृहघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा। (इदं चन्द्राय)॥ ४ ॥ ओं गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै यशोघ्नीतनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा (इदं गन्धर्वाय)॥ ५ ॥ ततः स्थालीपाकेन जुहुयात्। फिर स्थाली पाक हलवे से नीचे लिखी आहुति दे। **ओ३म् प्रजापतये स्वाहा** (इति मनसा) अग्न्याहुतिनवके हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। अर्थ—इन नौ आहुतियों को स्रुवे में बचे हुए घृत का प्रोक्षणीपात्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में छींटा देता जाए। अयं च होमो ब्रह्मान्वारब्धकर्तृकः इन आहुतियों को ब्रह्मा से उस हटी हुई कुशा को घोंटे तक मिलाकर देवे (तत आज्यस्थालीकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः) फिर घी और स्थालीपाक से स्विष्टकृत् होम की आहुति दे।

ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते। (तत आज्येन) फिर घी की आहुति दे।

ओं भूः स्वाहा इदं मग्नये। ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे। ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय। एता महाव्याहृतयः। ओंत्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाँसि प्रमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम्। ओं सत्वन्नोऽग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोअस्या उषसोव्युष्टौ अवयक्ष्व नो वरुणं रराणोवीहिमृडीकँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम्॥ ओं अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजँ स्वाहा (इदमग्नये)॥ ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तस्तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः। ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम श्रथाय अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय। (एता प्रायश्चित्तसंज्ञका)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०(इति मनसा) इदं प्रजापत्यम् (ततः संस्रव प्राशनम्)

(ततः आचम्य) फिर वर वधू स्रुवे में लगे हुए घी को अनामिका उंगली से लगाकर चाटें, फिर आचमन करें।

गङ्गाविष्णु० ॥ इस मन्त्र से।

(हस्तौ प्रक्षालनम्) फिर हाथ धोवें

(अथ पूर्णपात्र दानम्) अब पूर्ण पात्र संकल्प करे।

अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे इत्यादि अस्यां रात्रौ कृते-तच्चतुर्थी होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं मिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(इति पूर्णपात्रदक्षिणां दद्यात्) यह पूर्ण पात्र और दक्षिणा ब्रह्मा को दे। (स्वस्तीति प्रतिवचनम्) ब्रह्मा स्वस्ति ऐसा कहे।

(ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोक्षः) फिर ब्रह्मा की गांठ खोल दे

(ततः पवित्राभ्यां शिरसंमार्जनम्) फिर वरुण जल का पवित्रे से वरवधू के ऊपर छींटा दे, इस मन्त्र से --ओं सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु। (ततः ऐशान्यांदिशि प्रणीता-पात्रं न्युब्जीकुर्यात्) फिर ईशान दिशा में प्रणीता पात्र को उल्टा करके रख दे, इस मन्त्र से ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यंच वयं द्विष्मः (ततःपरिस्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्य घृताक्तं हस्तेनैव जुहुयात्)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर जिस प्रकार वेदी के चारों ओर कुशा धरी थी उसी प्रकार उन कुशाओं को उठाकर घृत में भिगोकर में अग्नि डालदे, इस मन्त्र से
ओं देवा गातु विदा गातुं वित्वा गातुमितः मनसस्पत इमं देवयज्ञँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा (ततः पृथूदकपात्रस्थं आम्रपल्लवेन जलमानीय मूर्ध्नि वरो वधूमभिषिचेत्)।

अर्थ–फिर कलश के जल का आम के पत्ते से वर वधू के ऊपर छींटा दे इस मन्त्र से। **ओं या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नीं निन्दिता तनुर्जारघ्नीतत एनां करोमि सा जीर्यत्वं मया सह श्री अमुक देव्या।**

(ततो वधूं स्थालीपाक प्राशयति वरः)

फिर वर वधू को स्थालीपाक हलवा खिलावे, इन मन्त्रों से
ओं प्राणैस्ते प्राणान्संदधामि। ओं अस्थिभिरस्थीनि संदधामि। ओं त्वचा ते त्वचं संदधामि।

(ततो वधूहृदयं स्पृष्ट्वा वरः पठेत्)

फिर वर वधू के सीधे कन्धे पर अपना सीधा हाथ लाकर उसके हृदय से लगावे। इन मन्त्रों से––

ओं यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रियं वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतमिति। (अथ कंकणमोचनादीनि युतग्रन्थिविमोचादीनि आचारप्राप्तानि)

फिर वर–वधू के कंगना गांठ लोकरीति के अनुसार खोल दे इस मन्त्र से:––

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कंकणं मोक्षयाम्यद्य रक्षांसि न कदाचन
माये रक्षां स्थिरां दत्वा, स्वस्थानं गच्छ कंकण ॥
तत उत्थाय वधू दक्षिणहस्तस्पृष्टस्रुवेण घृत फल पुष्प पूर्णोनस्रुवेण पूर्णाहुतिं कुर्यात। फिर घी फल फूल स्रुवे पर रखकर वधू के सीधे हाथ से अग्नि में पूर्णाहुति दिलवाये।

मन्त्र—ओं मूर्द्धानं दिवो अरतिम्पृथिव्या वैश्वानर मृतमा जातमग्निकविँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जन यन्तु देवाः स्वाहा। (इदमग्नये) ततः स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रेण गृहीत भस्मन। फिर स्रुवे में की भस्म लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुलि से उस भस्म को वर-वधू के अंगों में लगावे।

त्र्यायुषं जमदग्नेः—इति—ललाटे (माथे पर) ओं कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् (गले से) ओं यद्देवेषुत्र्यायुषमिति दक्षिणबाहूमुले (सीधे कन्धे से) तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदय (छाती से)

वधू के भस्म लगाते समय तन्नो इसकी जगह तत्ते ऐसा पढ़ना। फिर यथाशक्ति कर्म कराने वाले आचार्य को, ब्रह्मा को और आहुति देने वाले को व अन्य ब्राह्मणों को भी बहुत-बहुत दक्षिणा दे।

इति साङ्ग विवाहपद्धतिः समाप्ता।

५०१०८० रैक्नोकल प्रिंटिंग प्रेस, (निकट दिल्ली) में मुद्रित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जापान, चीन, बंगाल, आसाम, कामरूप व मिश्र देश का "सच्चा"

काला जादू

जादू विद्या के सम्बन्ध में सब लोग कुछ न कुछ जानने के इच्छुक रहते हैं। इस पुस्तक में जादू एवं बाज़ीगरी से सम्बन्धित सैंकड़ों प्रकार के करिश्मों का वर्णन किया गया है, जिन्हें जानकर आप गोगिया पाशा, सरकार, देवकुमार को भी भूल जायेंगे। अपने मनोरंजन के साथ-साथ दूसरों को आश्चर्य चकित कर देने वाली विधियां।

सजिल्द 12/- रु॰ देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

सन् 1971 में क्या होने वाला है?

आगामी वर्ष में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारी उलट फेर होने वाले हैं। करोड़ों लोगों की किस्मत का फ़ैसला करने वाले शासकों तथा आम जनता को भी आश्चर्यजनक घटनाएं देखने को मिलेंगी।

नया वर्ष आपके भाग्य, धन, व्यवसाय, स्वास्थ्य, सन्तान, नौकरी, विवाह, प्रेम, यात्रा, मामले-मुकद्दमे, शत्रु-मित्र, एवं परिवार आदि के लिये कैसा रहेगा? इसकी दैनिक जानकारी प्राप्त करने के लिये शुभ चौघड़िया मुहूर्त में विद्वान ज्योतिषी द्वारा निर्मित तथा हमारे यहां से प्रकाशित श्री बापू राष्ट्रीय मशहूर जंत्री मंगाकर पढ़िये। मू॰ 2/- रु॰ डा॰ ख॰ 2/- पृथक

नोट:- 2/50 M.O. भेजकर एक जंत्री बुक पोस्ट द्वारा मंगालें।

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

इस घोर कलिकाल में मनवांछित फल प्राप्त करने के लिये देवी देवताओं की उपासना ही सर्वोत्तम साधन है।

निम्न लिखित पुस्तकें आज ही मंगाइए।

राम उपासना	6/- रु॰		
कृष्ण उपासना	6/- रु॰	भैरव उपासना	6/- रु॰
विष्णु उपासना	6/- रु॰	लक्ष्मी उपासना	6/- रु॰
शिव उपासना	6/- रु॰	गायत्री उपासना	6/- रु॰
गणेश उपासना	6/- रु॰	दुर्गा उपासना	10/- रु॰
सरस्वती उपासना	6/- रु॰	काली उपासना	6/- रु॰
हनुमान उपासना	6/- रु॰	देवी देवताओं की आरतियां	6/- रु॰

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

जन्म-तिथि तथा नाम के अक्षरों द्वारा —
— जीवन का हाल जानिए

अङ्क ज्योतिविज्ञान

लेखक - राजेश दीक्षित

इस पुस्तक की सहायता से प्रत्येक स्त्री-पुरुष अपने जन्म की तारीख तथा नाम के अक्षरों द्वारा प्रेम, विवाह, व्यवसाय, धन-प्राप्ति भाग्योदय तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान में घटनेवाली घटनाओं की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकता है। जन्मराशियों का विस्तृत फलादेश भी इस पुस्तक में दिया गया है। मूल्य-[illegible] पृष्ठ [illegible]

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार दिल्ली 6

सरल ज्योतिष परिचय

ज्योतिष के सम्बन्ध में प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। ज्योतिष सम्बंधी श्रेष्ठ साहित्य का परिचय भी इससे प्राप्त होगा। अनेकों चित्र, मू॰ डेढ़ रु॰ 1/50 M.O. भेजकर पुस्तक मंगालें।

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6.

स्वप्न विज्ञान

(ले॰ सत्यकाम सिद्धांतशास्त्री)

स्वप्न में भिखारी से राजा बनता है, तो कोई राजा से कंगाल। स्वप्न में विदेश यात्रा मिल मालिक बनना, हवाई जहाज़ या रेल का सफ़र, या कोई दुर्घटना आदि अनेकों, तरह तरह के स्वप्न होते हैं और प्रत्येक का फल भी पृथक होता है।

इस पुस्तक में हर तरह के लगभग १२०० स्वप्नों के फल लिखे गये हैं।

मू॰ 8/25 सवा आठ रु॰, डा॰ ख॰ अलग

देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयोऽस्तु नः ॥१॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः। ब्रह्मवक्त्रे स्थिता नित्यं निघ्नन्तु तव शात्रवान् ॥२॥

अक्षतान्विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः॥ चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुः कीर्तिर्यशो बलम् ॥३॥

आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रस्तथैव च॥ आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामाः भवन्तु ते ॥४॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते॥ धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः॥ स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोत्राभिवृद्धि धन धान्यसमृद्धिरस्तु। ऐश्वर्यमस्तु कुशलोऽस्तु रिपुक्षयोऽस्तु सन्तानवृद्धि सहिता हरि भक्तिरस्तु। आनन्द काले स्थिर राज्यलक्ष्मीः शिवप्रसादाद्बहु वाक्यसिद्धिः। वाचाकृतं शत्रुविनाशनं च दकारशब्दन्तु दरिद्रनाशः॥ ७॥

सप्तपदी -

१- तीर्थव्रतोद्यापनयज्ञदानं मया सह त्वं यदि कान्त कुर्याः। वामांगमायामि तदा त्वदीयं जगाद वाक्यं प्रथमं कुमारी ॥१॥

२- हव्यप्रदानैरमरान् पितॄंश्च कव्यप्रदानैश्च मया यजेथाः। वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं द्वितीयम् ॥२॥

३- कुटुम्बकार्यं मदनुज्ञया चेत् कुर्याः पशूनां परिपालनादि। वामांगमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं तृतीयम् ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

पं. ओम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०३३९
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

४- आयव्ययौ धान्य धनादिकानां पृष्ट्वा
हि मां स्वीय गृहे निदध्यो:। वामाङ्गमाया
मि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं चतुर्थम्

५- देवालयाराम तडागकूपवापीर्मयात्वं यदिकार-
येथा:। मा माङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद
कन्या वचनञ्च पंचमम ॥५॥

७- न सेवनीया परकामिनी त्वया न रागदृष्ट्या
च विलोकनीया। वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं
जगाद कन्या वचनं च ~~षष्ठम~~ ॥ सप्तमम् ॥

६- ममानुमत्या सकलस्य वस्तुनो यदा
विदध्या: क्रयविक्रयौ त्वं। वामाङ्गमा
यामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं च
षष्ठम ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection